THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO. MBB—1971— 161-89,

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

ABB 1473-167
1. Film strip number

40
2. Source

SAMPŪRNA CARCĀSAÑGRAHA
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

6. Name of Scribe

NEPĀLĪ PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

DEVANĀGARĪ
8. Script

22 cm. x 10 cm.
9. Size

7
10. Lines to a page

101
11. Number of leaves in complete work

X
12. Missing leaves

Many Siddhās
13. Author and Date of composition (if given)

13
14. Number of Chapters

15. Remarks This is a complete collection of ritual songs mentioned in different texts and by different scholars.

April 2, 1973.
Date photographed

CONTENTS

Chapter	1,	PAÑCAŚĀLIPŪJĀ	4 B 3
,,	2,	HA RASYAPŪJĀ	7 B 5
,,	3,	ŚIRĀHŪTIPŪJĀ	18 A 1
3	4,	SINDŪRAMAKUṬAPŪJĀ	35 B 3
,,	5,	~~KĪLANADĪṢĀ~~	~~42 B 4~~
,,	6,	MĀMSĀHŪTI	42 A 4
,,	6,	RAJAPRAVĀHANA	44 A 4
,,	7,	SINDŪRA	45 A 5
,,	8,	SINDŪRAGRAHANA	45 B 5
,,	9,	GURUSAHAYOGA	47 A 4
,,	10,	MAHĀSINDURAPŪJĀ	53 A 7
,,	11,	CHATRISAṂVARA	62 A 1
,,	12,	AHORĀTRA	85 A 3
,,	13,	CAKRAPŪJĀ	101 B 7.

हरिजातु धाते २ खसतराटपल्लिपत्रठविरिगंभुवते वाउपल्लिपश्रीख
एपरश्रु ॥ द्विरदवरप्राक्रियतररुधिरयात्रियसप्र अस्थादलच्छम्बि
यारे २ अवरराटदीक्षिय सायरचक्रा मणिकलनिधिनिखिलवेदय
न्ति ॥ गुरुचरणनिवर साभगवती परिभावना मनकुसुमठदक
पतिसंफलिपूजा २ प्रणावपरिभारथि सप्रपरिश्रुतिताभवजलनि
धिसंतरन्तसेतु श्रुतो ॥ ॥ कुंभपूजा ॥ गीत ॥ राग ॥ गन्धाभैरवी
॥ताल ॥रूप ॥ गोकुदहन पंचस्तानख रुपं २ पंचामृतरसपंचसा

ओंनमः श्री पद्मनृसिंहेश्वराय ॥ ओंनमः श्री [illegible] सम्वरायः ॥ ओंनमः
श्री उग्रतारावज्रयोगिनैः ॥ अथ पंचसालि पूजा याचनाकराठुल्ला ॥ प
रिकर्म्म ॥ गुरुमण्डल गीत ॥ राग ॥ भैरवी ॥ ताल ॥ रूप ॥ मध्येमेरु महा
मणिकनकराजिते पूर्व विदेहजम्बुद्वीपं अपरगोडायनीउत्तरकुरुभव
लेप्रेचवर्षा पंचजिनव्यापियारे ॥ ध्रु ॥ नमेपद्मवज्रविश्वश्रीजिनृवि
श्वहितविश्वभूत पंचमुरुति अश्वद्वीपातला वहतिजिनमतसा
हरंतु भयतिमिरघनघोररूपं ॥ जातवेदनेसयाठपद्मीपराठपद्मिप ॥ ७ ॥

भुमे करुणा आलिङ्गणाहेरुवरवेलायिया ॐ वज्रवाराही आलिंगणा सं ॐ
स्वरवेलायिया ॥ छनिसम्बिरवीरेश्वरसहिंगहितहिंतहिं अष्टश्मशा
ति ॐ अजहृतसर्वदेव वज्रघोडशादेवी मिलतिभयतसंहावे ॥ त्रिभुव
नतुल्लएकुरायाभराडोत्रिभुवनतुल्लएकवीरं विरा ॐ त्रिणिभुवन न
बनायकसप्रशादिरेफलिंयाउएकाकारा ॥ अहिनीधि सं सतगुरु
बोलंतुरायेछादिगोलभावभावि ॐ जन्ममरणाभयवंधनछादिगोलभ
यमोरु अतियसंहावे ॥ ॥ मामकीपूजा ॥ गीत . राग नाथ ताल ॥

लिपूजिता॥ ॐ॥ नुलदेवीवरिरायविभुवनवीए ४ विमलरोयचक
समया आनन्दे॥ ॐ॥ वीरंवीरेश्वर सहजानन्दे ४ कलंकमलासनह
दयानन्दे॥ ॐ॥ पंचब्रह्म पंचस्कंध स्वरूपं ४ देवासुर नरवंदितह
दया॥ ॐ॥ ॐ आः ह्रीं खंखधनकरिते ४ डमरुघराठध्वनिवीरमा
नन्दो॥ ॐ॥ आदिपूजा॥ विसर्जनाथि॥ गीत॥ राग॥ प्रतमंजलि॥ ताल॥ माथ
अतिबलअतलजल जो ध्रुवमाझे मेरुमराडलचक्रराया ४ वज्रपंजल
सालसंपरि भेदिरे मेरुमराडलचक्रराया॥ ॐ॥ डमरुविलासिया

॥ २॥

ॐ वज्र घण्ट मुद्राधरु ॥ ॥ धर सुसंवर नदेह धरु ॐ सरद सुशोहिय चन्द्र
सरु ॥ ॥ मायादेह रिणा जेगु ॐ सोहिय कमरणा सत्व मइ ॥ ॥ देवचवा
गीत ॥ राग ॥ लालित गुंजालि ॥ ताल ॥ मरि ॥ उरंगाभरणा श्रीरितनउशो
भा ॐ इन्द्रनि रुंद्रनि पिङ्गलकेशा ॥ ॥ जगतगुरु की प्राकिया गुरणदेवी ॐ ॥
दुष्टमारविनाशानि देवी ॥ ॥ रक्त नयनत्रिणि रुद्र माला ॐ खऊ कर तृक
पालनि लोत्पला ॥ ॥ व्याघ्रचर्म्मवस्त्र प्रत्यालीढा ॐ खर्वलम्बोदर सवा
कान्ता ॥ ॥ चरणा सरणा श्री उग्रतारिणी माता ॐ भनयिश्री अमोघवज्र

जटि॥ रक्तवर्णा त्रिणि लोचन सुंदरी रे अष्टादशभुज पंहरणा किरणी रे
॥ध्रु॥ तुलदेवी वारुणि मामकि देवी रे जगतय मोदिरे मया सुरागे रे
॥ध्रु॥ आगम वेदपुराणावषाणो रे योगयर्मदिक्षा गुरुउपदेशे॥ ॥ पंच
बुझस्व रूपकजतिले रे सयारयोगिनी माहेवहिरुव॥ ॥ सतगुरु चरणा शि
रेगातधरिया रे भनयिनिवाकवचसुरसरसंपि॥ धुप॥ गीत॥ राग॥
भैरवी॥ ताल॥ त्रिपूरा॥ नमहुं अकाररूपधरुदा रे स्वछविसत्वउवा
धरु॥ ध्रु॥ तेनाहुं हुं रे तेनातेते हुं हुं हुं॥ ॥ इंदाआलिंगणायोगथरु ॥ २॥

ज्ञानदेवी रं ओड्डियानेपूर्णागिरिकामरूपश्रीहत्सुविशुद्धसरोजलनृत्ययति रं
॥ ॥वसुदलसरोरुहवरेधर्मचक्रबोडशदलसम्भोगचक्रं रं द्वात्रिंशतदल
कमल महासुखचक्रं हूँकाररूपश्रीहेरुकनाथं॥ ॥दहयिजिनविद्यादिचि
तयाभेदनीश्रवणि मृतधारयादरुपी रं पीठादिशभूमिगतसुगतपूजानिजि
नज्ञानदायनी वीरेश्वरी॥ ॥दर्पणाप्रतिविम्बजलचन्द्रोपम अहिनिसि रं
सुमरनेवज्रदेवी रं जन्मजन्मे मोरु तुंजुपायशरणा दुर्गतिनाशन मोक्षप्रदा
ना ॥कुम्भपूजा ॥गीता॥ राग॥ गंभाभैरवी॥ ताल॥ रूप॥ गोकुदहन पं

॥ श्रीः ॥

चरितगीत ॥ ध्रु ॥ ॥ अथ सालिग्रहनयायथात ॥ हाडाभरणाहाले ॥ ॥
थतलिउपमालकोहाले ॥ ॥ वाहिलहिये ॥ गीत ॥ चक्किकरउल ॥ ॥ थुणि
पंचांकशपूजायाकरणउल ॥ ॥ ॥ अथ रहस्यपूनायाकरणउआरम्भया
य ॥ ॥ गुरुमण्डलगीत ॥ मध्येमेरु ॥ ॥ रहस्यपूजागीत ॥ राग ॥ भैरवी ॥
ताल ॥ एकताल ॥ निर्म्मलादिचतुषष्ठिदलसरोरुह मध्येगाहनकादि
चलनादरुचिरं समिरखेलित लालितोर्द्धगामिनी तरलितसुतीप्रभञ्ज
लरुपि ॥ ध्रु ॥ ॐ नमामिदेवी श्रीवज्रविणाशिनी विश्ववणाहरणाखसम ॥ ४ ॥

जगत्जननी॥ ॥ पूर्वदलगतरक्तवर्णांगी ॐ इशानेयामिनीदेवी नीलवर्णी
॥ ॥ वायुवेमोहिनीदेवी श्वेतवर्णाभा ॐ पश्चिमेसंचारिणीदेवी गौरवर्णा
हा॥ ॥ नैऋत्येसंवासिनीदेवी हरितवर्णाभा ॐ दक्षिणेचर्चिकादेवी भूमव
र्णांगी॥ ॥ चतुर्भुजएकानना पंचमुद्राभरणा ॐ स्वस्ववीजसंभवानवरसुंदि
गंबरा॥ ॐ॥ ॥अथ श्मशानपूजा॥ गीत॥ राग॥ भैरवी॥ ताल॥ रूपक॥ ॐ ॐ
आः हूंफट् अनंतरे स्वाहा॰ मंत्रउच्चारणारे ॐ पूजापूज्यैकपूज्येभावे॰ नत्वस्व
रूपवरिभावे॥ ॥ खखखाहि २ वलिप्रदरे॰ घेघेघाट्य ॐ विघ्नहरे ॐ पंचा

नशानस्वरूपे ॐ पञ्चामृतरस पंचसालिपूजिता ॥ ॐ॥ तुलदेवीवरिराय वि
भुवनवीरा ॐ विमलरियचक्रसमयाआनन्दे॥ ॥ वीरवीरेश्वरसहजानन्दे
ॐ कलंकमलानसनहृदयानन्दे॥ ॥ पंचवक्त्र पञ्चस्कन्धस्वरूपे ॐ देवाभ
सुरणानप्रसुदितहृदया॥ ॥ॐ आः ह्रीँ क्रों स्वधनकरिंते ॐ डमरुघ
राडध्वनिवीरमानन्दे॥ ॐ॥ ॥ बट्योगिनी पूजा॥ गीत॥ राग॥ कर्ण
दि॥तान॥रूप॥ बट्योगिनीदेवी त्रिभुवनाव्यापिनी ॐ विघ्नमारुष्ट
दर्पविनाशिनी॥ ॐ॥ नमामि ॐ देवी श्रीवज्रवाराही ॐ ऋद्धिसिद्धिदायनी ॥५॥

चिंतितचिंतकलशं रं ॐ आः हूँकारवज्रामृतमुद्रकसप्तसंशोधितज्ञान ६
मृन्मयं॥ ॐ चन्द्रामृतरसंबोधिफलदायकं सर्वजिनव्यापिनसहजक
लशं रं जगतमलशोधकशून्यताकरुणाभावसंसारनाशनेविरक्षरूपं ६
॥ ॥ वज्रपरमाद्भुवगंधाब्जसंयुक्तं शंखशोधितपंचप्रियुतं रं हूँकारमं
त्रपुष्पसंवद्धवज्रसंस्थापितविपावकलशं॥ ॥ षटअभ्यंतरतप्तरूपभाव
आकृष्यसरडाकिनिजलपं रं स्फुरितिसारदेवताचक्रज्ञानसत्वमानीय
हृक्षीजकलशं॥ ॥ पाद्यादिआचमनंदानप्रणयसर समयसत्वप्रवेशित

मियरसपंच सालिरेपंच स्नातसर्वरिणा॥ ॥सर्वयक्षराक्षसश्रुतदेवतपि॰
शाचीन्माडारपरे ३ डाकडाकडाकिनीछिये अष्टसशानि ३ बलिगृह्
नुरि॥ ॥दानपतिसर्वकार्य्यंतत्वया सर्वसुखसंपत्तिशांतिरे ३ यथैवत॰
थैवभुंजथपिवथरे जिघ्रएवमातृकमर्थरे॥ ॥समयरक्षंतु दानपति
रे सर्वसिद्धिसंपदशांतिरे ३ आसंसारतथागतवचने सर्वसिद्धिसंप
तिभुंजिरे॥ ॥विसर्जनाथि॥गीत॥ अनिल॥ ॥कलशपूजा॥गीत॥ ह
राग॥ ललित॥ ताल॥रूप॥ अनुत्तरतथतावंकारसंभव रत्नरुपचि ॥ ६ ॥

ग्रहरविशशि भू नारका मेरुशृंगे भ्रमेदि चक्रवादंप्रकृति परिभवं तक्षु
काकारेश मज्जौरेन्द्रवृन्दाभवशशिशरितं सागरंनांडवयः॥ हस्ताहो
क्षेत्रपोतेरभक्षभगवतः पद्मनृत्येश्वरस्य॥ २॥अपिचयासासेसारसंकि २
विरचयतिमिलंशांतियोगांमहेतोः साधिर्यस्यप्रशादात् विशतिनिज
भुवंस्वामिनोनिष्प्रतन्त्र तस्यप्रत्यात्मवैद्यं समुदयतिसुलक्ष्मव्यणाजाल
मुक्तं॥ कुर्यान्नस्याङ्घ्रिपद्मं शिरसिविनिमयं सद्गुरुसर्वकालं॥ २॥ ओं ६
नमःश्रीपद्मनृत्येश्वराय २॥ ओंनमःश्रीचक्रसम्बरायः॥ ॥ रागमाला६

विमलकलशं महागच्छविजय बोधचित्तरूपं समयसत्वज्ञान सत्व
किंभुतं॥ ४ ॥ नामकिपूजा॥ गीत॥ रक्तवर्णा॥ धूपगीत॥ नमः हूं॥
देवपूजागीत॥ सामायु॥ ॥ सोबिग्रहणा॥ गीत॥ हाडाभरणा॥ उपमा मोल
कोहाले॥ ॥ वाहिलहिये॥ गीत॥ चक्किकुराउल॥ संहार॥ गीत॥ जयंजयं॥
गराचक्का॥ गीत॥ गाजजिन॥ ॥ उपमालकोहाले॥ ॥ थुतिरहस्यसिद्धपूजा
याकरठ सिथला॥ ॥ थतशिराहुतियाउचाआरम्भयाय॥ ॥ ओंनमः श्री
पद्मवृत्तेश्वराय॥ २॥ ओंनमः श्रीचक्रसंवरायः॥ ॥ भ्रस्यिनखलाराउखराउं॥ ॥७॥

लारुणशीतवयते ॐ पंचजितमकुट मणिलयते॥ ॥धर्मचक्रमुद्राकु
रारासि ॐ घरणाचापायिया प्रज्ञाध्रुवस्थाते॥ ॥सुरासुरगामीत व
चरयरा ॐ भतयि प्रमादिक्ष जिनगुणालयते ॥ॐ॥॥आदिपूजा वि
समाधि॥ गीत॥ अनिल॥ ॥ कलशापूजा॥ गीत॥ अनुत्तर॥ ॥अग्निस्था
पन॥ गीत॥ राग॥ मंथा भैरवी॥ ताल ॥रूप॥ त्रिणिलोयन चउब्रह्मवि
हारा ॐ करुप्रतिष्ठा मण्डलहो मे॥ झ्रा॥ होमेहोमकरायिया ॐहूँनहिय
चउमारा ॐ रागद्वेषमोहवंधिरे छादिरे॥ झ्रा॥ प्रज्ञाघण्ठगायेरवया ॐरवि

॥ राग॥ अंधार भैरवी॥ ॥ ओँतमः श्रीचक्रसम्वराय:॥ जाव॥ धर्म्मधा
तुजिनहृदया तन्दकालिकालिका॥ कोला॥ जगदालोकलोचनो॥ जाव
॥ कमलासनस्थशशिवर्णधरा कलंकमला॥ कोला॥ सहजानंदकालि
का॥ निखिलंजिनहृदयाल्हादसुंदरा॥ कोला॥ नर्त्तनिमंत्रकुमारा॥ चक्र
जाव॥ ॥ राग॥ अंधारभैरवी॥ तला॥ चस्यति॥ विश्वसरोरुहविद्रु
विम्वा ३ ँमोकारवियापितशुसंभवा॥ ध्रु॥ नमामि ३ वागीश्वरसयेरमु
निहृदया ३ ँविरासयि कयागारमनोहर सयरजिनहृदया॥ ॥ पितनी ३ ॥ ८॥

आः हूं ३ को भाषि पश्री मंजुवज्रा॥ ॥क्रलिशकमलसंयोगे सहजानन्दि
पतत्तरेतासुरिरागति ३ विमुक्तषट्भुजरत्नमकुधारि कृष्णशीतानन
दक्षिनबामे॥ ॥इन्दुमराडलोपरिवज्रपर्य्यकासनकुंकुमारुणनरुप्र
ज्वलिता ३ं वज्रखड्गसर दक्षिनकरधारि वामघरोगमलचापधारि॥
विचित्ररत्न आभरणाविभूषितस्फलायि अनेकमुर्त्तिरूपधारि ३ सत
गुरुचररणकमलप्रसादात्सामि परमामिति पदो ३ ३॥ पंचधाराहृदयके
॥गीता॥ राग॥ तोडि॥ ताल॥ माथ॥ कोलाई लोथियावोला मंमुनिरेकन

शशिचापयि आचार्य्यचयिथा॥ ध्रुं॥ वामदहिनकरे अक्षवोर्प्रात्र रँज्व
रयिवज्रानरआज्ञातिना॥ ध्रुं॥ कर्णावीलंत्तरे अभ्यंतरहोमे रँ वज्रपवन
घरात्तिय संवोधा॥ ॐ॥ मासकिपूजा॥ गीत॥ रक्तवर्णा॥ धूप॥ध
गीत॥ नमःहुं॥ देवपूजा॥ गीत॥ उरंगाभरणा॥ ॥आहुतिविये॥ गीत
॥ राग॥ पंचम॥ ताल॥ रूप॥ ज्वलितवज्रानर रविशशिकुचितडावायि
ओंकारनादरुपी रँकुंडरुपोगिनि भुवनारिणा पयिसायि जिनशशिवि
स्फुरुपं॥ ध्रुं॥ परमानन्दमुरुतिरूपधारी क्रोधाधिपश्री संजुवज्रा रँओं ॥ ९॥

॥ ९॥ ॥ ओंजिनवज्रसत्वाय॥ ॥ ९॥

लक्ष्मेश्वरी ॐ वज्रयोगिनी वज्रसरिऊ तकारधराचिलोचती ॥ ॐ॥ नमामि २
वाछलि सिद्धियोगिनी गणासरिऊता ॐ अष्टसृद्धि सर्वसिद्धियोगिनी ग
णासरिऊता ॥ ॥ आदित्यसरऊलतेजसरसदिपमाल सुविम्बरा ॐ चक्रिक्र
राऊलकरिऊ लोचकुसेवलावि भुषिता ॥ कर्तिखर्पर मारछेदनी मक्र
रकेशादि गंवरा ॐ मुराऊमाला खट्वांगसरिऊ ताललजिह्वा भयंकरा ॥ ॥
तुलदेवी एकु अनेका सयरविश्वविया पिता ॐ तुंजुचरणोचिलेधरि अवधु
वर्णयागावयिया ॥ ॥ थत मूल नृत्य ॥ गीत ॥ राग ॥ अहरिऊ ताल

कोला ॐ घनकपिथि होयि वज्रईकरु गोक्तियायि तलोला ॥ ॐ॥ सलय ॐ
जकुंडुरु वज्रायि डिरिडि माता नहि वज्रयि॥ ॥ तहि भरु खाजन गाधे सय ॐ
लापि वयि तयायि ॐ हालि कालिंजन पतयायि डुंडुरु वज्रन यायि॥ ॥ च
उसमकस्तुरि सिन्हा कर्पुरलाबन यायि ॐ सलय जयि धन सालिजले ॐ
तहि भरु खाजन यि॥ ॥ प्रेषुणास्त्रवकरं ते सुक्ष्मा भुजन सुन यि ॐ नि ॐ
लं शुभ अंगचन्द्रावयिया तहिन सरा यान यायि॥ ॥ शिरा हुति॥ गी॥
न॥ राज॥ तलावरि॥ ताला॥ माथ॥ सर्वखड्ग विडङ्गा मणिडना विश्वमा ॐ ॥७०॥

फलिंगेल मण्डल सम्वरवज्रवाराही॥ ॥ शिलोका चरणावली कार
लीलया निजपदा ङ्गुलिनोत्थशुविश्व श्रोली महासुखं विस्वयन
लिने लीनंस्वबोधोदया अंबोजाये रतोपि पदमपिनिर्वृतिपदं प्राप्ता
विधिनोदया दात्र जाय चित्त क्षय सहजायं नन्दावंदामहे॥ ॥ थनउप
मालको हालो॥ ॥ कुमारीआवाहनपूजा॥ गीता॥ राग॥ तोडि॥ ताल॥ साथ
॥ वाराहीवेष्ठितविदलसरोजा दितकमण्डल मध्योष्ठिता रक्त भर्म्मोद
या चापीयातादेवी मकुटकेशादिगम्बरा॥ ॥ प्रणामामिवाछलिभीव

साथ ॥ हाडाभरणोक्रियायिरे सबरयिकवारिरे वेशा रे तुलबोलने मंडि
यासुशाने सकटकेशादि गंवरा ॥ ध्रु ॥ रीरेरेमोरु सबरलाया समरसुन्दरी
मोरुकोला रे हमविहागी वज्रवाराही फेडमहिमोरुशारा ॥ ॥ शालि
भोयने वरंसुहमयने कर्पूरभवर्तनबोला रे गगणनीलावर्णा वरिडेनेत्र
डामेरुमण्डलभरिवरणा ॥ ॥ नियंथडवटहुँ झाडिगेलसबर पचिसणि
शून्यभडारा रे हमविराहिनी वज्रवाराही तुलबिन्दुदेषमिअंधारा ध
॥ ॥ गावेतिलिलावज्रखलियाउरे सतगुरुचरणाआराधे रे समयानंदे ६ ॥ ७१ ॥

कमलकलिशघराठकहुपियारे ॥ ध्रु ॥ योगिनीतुम्हविनुषनहुंनजीवयि
ईं नोरासुहखंवियारेकमलमेंपिवयि ॥ क्षेपणाहुयोगिनीलेपतजा
यि ईंमणिकुलवहियारेवडियानसमाने ॥ गाशुघरेघोरेकुंवियानं ई
चंद्रसूर्येदुईपक्षीणाभराडो ॥ भनायिगोडारिहमकुंदुखीनो ईं न
रयनारीमाहिउभयनहविरा ॥ राग ॥ गोडगी ॥ ताल ॥ एकताल ॥ च
किंकराउलकणिठलोचकेमेखलाभूषिता यिवेरुंडनराशिरमाला ईं भी
लेचकिलयियाभस्मविभूषित गगणाकतोडिवधुरिलाया ॥ ध्रु ॥ प्रभु

त्रयोगिनी अज्ञानबोधिप्रदायनी ॥ त्रिभुजरक्तवर्णिनी लोचना ३
लोहितवर्णाप्रज्वलिता ३ त्रिभुवनाव्यापिनी दहिनकर्णि धारि मज्जप्रति
नकपाल धारी ॥ ॥ चक्रिकराउलकरिठ भारि हाथेलोचकत्रिभुजिणी ३
चरणोपर दहिनेकर्णिय मेखलानरशिर मालविभुषिता ॥ ॥ विश्वज
ननीपरमेश्वरेश्वरी भवभयनारिणी वीरेश्वरी ३ सहजानंदस्वरूपि
णीदेवी कृपासिद्धिचरणप्रशादायनी ॥ ॥ थनवाहिलद्धिये ॥ गी
ता ॥ राग ॥ कर्णादि ॥ ताल ॥ रूप ॥ त्रिहंडाचापयियोगिनी देहकवादि ३ ॥ ॥१२॥

हारिणी ॥ ध्रु ॥ रुणाझुणाअनेहा हुंकारनाचयि मारणिरवारूवे ॥ ॥ जि
मपरयानिरंदेहप्रलंजे रं जिनजननिलवज्रयोगिनी ॥ ॥ जयंजयंहाडाभर
रणास्रशोभा रंकर्त्तिकपालखट्वांगधारि ॥ ॥ जयंजयंरौद्रस्मशानिथीरे रं
ग्रीवेसुजनरशिरमाला ॥ ॥ जयंजयंराखहु जगतसंसारे रं प्रणामामिअ
हयसंवाछलि ॥ ॥ ॥ थनंलिगणाचक्रस ॥ गीत ॥ राग ॥ भैरवी ॥ ता
ल ॥ एकताल ॥ गजजिनउग्रहाथे धरियाकमलकुलिशअर्ज्जवारि रंड
मुरुकर्त्तिकुठारचिभूलवामखट्वांगकरधरा ॥ श्रीसम्वरलायावाछली

संश्री हेरुवमे मोक्षकोलायुगेनाथश्री सम्बलाया॥ ॥ वज्रकोरेरकहाथे
धरिया करिऊक्रियाऊखडांगेरं संप्रटयोगिनीकमलविलासिगेल म
हासुखमेरीप्रशादो॥ ॥ वज्रवाराही आलिंगणा सम्बरताचयिवहूविविहर
भोगेरं वाछलिकोलैयाक्रीडन्ति हेरुवअर्द्धभुवणासमरणासुसंगो॥ ॥स
हजसंभृतिलैयागावंतिकरणापाश्रीहेरुवचरणप्रशादे रं प्रज्ञाआलिंग
णाक्रिडंतिहेरुवविरएसायि भूत्येकरुणा॥ ॥ संहारगीत॥ राग॥ भैर
वा॥ ताला॥ नाथाजयंजयंवाछलिसयेरसुभास्करि रं अखण्डस्वयसं ॥१३॥

विषयविद्रुपवन संयोगेज्वलयि चन्द्रादि नाभिकमले ईं दहयि जिनविंब
शशि रुपयि सुरतवज्र तिनिआभासमय स्वाम सयरं॥ ध्रु॥ नमे मंजुघो
षं कालचक्रदेवज्र सम्वरविश्वरुपं ईं पयिपद्म संयोगे संभवनिश्चरा
सहजआनन्दमय ज्ञानरुपं॥ ॥वज्रपर्य्यकशातकुंकुमारुणातनु नाम स
गीतिअलोभय ध्यातं ईं जगातदुःखनाशनं बोधिफलदायक योगयर्म्मे
मोरुभावहृदयं॥ ॥गुरुवाक्य शुरुधरिया अर्द्धपवनकुंचियमणि मऊ य
चन्द्रउनोदिधरिया ईं चउचक्रपात्रश सूर्य्यभूमेमोरुवाराहभुवनं॥ ॥

तुरुजांगुलिना रं मारयिरेचापरिरमाया· मानुभवत्रुद्रासिक्रिरिणा
॥ पाशवलमुंजवामहाथे धरियउनरशिरमाला रं नीलहरितवी
हितकनकाभवच्छमुख· अतिविकरालअधरा॥ ॥आलिठपेयोभै
रवचापयियारे· कालिरणविविलुद्रा रं विश्वकुलिशअर्द्धचंद्रजयाप्र
कचाछत्वर्मबद्रा॥ ॥छत्रिसंविरवीरेश्वरनायक· त्रिणिचक्रम
होवीरविरा रं करुणाशृंगारवीरवीरेश्वरभुंजयिसयारसंसारथरा॥
॥ॐ॥॥थनठपमालकोहालो॥ ॥रा॥ लवित॥ ताल॥ रूप॥ विषय ॥७४॥

शूलकर्त्रिडमरुश्रुभशोभिता ँ मज्जपूरितकपालखट्वांगपाशपर्शु
श्वेतशिरोधरा॥ ॥पंचजिनवरमकुटआलंकृताषट्मुद्राआभर
णाविभूषिता ँ आलिकालिद्रई आलिढचापियाग्रवर्ममनिवास
कृष्णतनु॥ ॥नरशिरमालालंबश्री सर्वारिष्यचक्षुचिणिकरुणाहि
दया ँ जम्मजन्म मोरुतुंजुपाय शरणागावृतिपरमादिवज्रगीता॥ ॥
॥ नृत्येनांकमलपदभ्यांशिरशिकुचटनेस्त्रियंवकंकराठमालि वज्रा
लि वज्रपाणि परिगत शिरसं श्री खमारेन्द्रमौलि॥ वाराह्या भृष्टि

स्वप्नमायोपमाद्वय भावपरिभावना· वज्रधर्मसंघ शरणागतिय ईं गुरुभ्य
शिरिंगतन धरिया· गावंति सुरतवज्रजम्मजमेमो सुखअशरणो॥ ॥१
॥ ॥ थनशेषवलिविय॥ गीत॥ राग॥ मधुमत॥ ताल॥ द्रुतमान॥ प्र
मोदितदि दश भूमिसुन्दरीसरणां· मेरुमण्डल संछितलयना ईं वा
दशभुजचउवदनसुशोभित· वज्रवाराही कण्ठ आलिंगणा॥ ॥ फ॥ ॥
हूंहूंहूं दहदि स्फरणो मारसयर सम्बोधियोरे ईं वंदा आलिंगणा अव
यसंभावेनाचयिदाने· श्रीसम्वरलाया॥ ॥ कुलिश घंठ गजचर्मवि ॥१५॥

॥ ॥ स्वच्छयोगिनी येलेमेले मेला ः वज्रवाराही आलिंगना कोले॥ ॥स
र्वधर्मोय संभूतंज्ञानच र्यावि स्वथकं समंतभद्रवाचायं भाषमराऽलभु
तमं॥ पश्चिम॥ ॥ उथभराडो करुणाकवारि ः जयंजयं आलिंगना नीला
वर्णविरि॥ ॥ सर्वसत्वमहाचित्तंभुक्तं प्रकृतिनिर्म्मलं समंतभद्रचिताय
घोषमराऽलंसार्थि॥ उत्तर॥ ॥ संपूर्यं सर्वजगत मनोरथपदं सर्वनरा
णादिना पित्वा सर्वविकल्प मोहकरणं डाकिनी हेरुका दिना॥ जचक्रंप
रिवर्त्तनि जिन गुणा ज्ञान क्षय मोक्षहेतो॥ यस्या तस्य कपाल रहस्य म

क्रोठ घणामिव तडिनो नागचर्मोत्तरिय पायात्श्री सर्वरोव स्विभुव
तविजयी डाकिनीचक्रवर्त्ति॥ ७॥ ॥ अभ्यंतरप्रवेशु॥ गीत॥ राग॥ गोडयी
ताल॥ माथ॥ वंविनी सरोवर विरासयिकैसे २ उथभरादोमएउलला
या॥ भ्र॥ येजंकारहमेरजगतनिवासियारे॥ ॥ सर्वतथागताशान्तं स
र्वतथागतालयं सर्वधर्मायनैरात्मादेशमएउलमुत्तमं॥ पूर्व॥ ॥ अभि
यअभियानिरंजनदेशेसहजसुन्दरीलायाजयिस्ये॥ ॥ सर्वरक्षणासमु
र्णसर्वरक्षणमण्डितं समंतभद्रकायंभावमएउलमुत्तमं॥ दक्षिण ॥ १६

वाचरानौचचरंतु धर्म्मं॥ ॥ थुतिशिरा हुतियन्त्रयाच्चा याकराऊ समाप्तं॥ ॥ ॐ ॥ ओँ नमः श्री पद्मनृत्येश्वराय ॥ ओँ नमः श्रीचक्रसम्वराय॥ ॥ ओँ नमः श्रीवज्रवाराह्यै:॥ ॥ थनसिन्हासनयाच्चाकराऊ आरम्भगुल॥ ॥ थनमूल पूजा ॥ गीत ॥ राग॥ अहेडि॥ ताल॥ माथ॥ हाडाभरणोंकियायिरे सम्वरय रयिकवालिरेवेशा २ तुलवोलंते मारोड्या मशानेमकुटकेशादिगंवरा॥ ॥ रेरेरे मोरुसम्वरलोया समरसुन्दरी मोरुबोला २ हमविराहिनीवज्रवाराही फिउमहिमोरुशारा॥ ॥ शालिभोयनेवरसुहमायंते कर्पुरभवयिंतवोला

न सा मनसा वृत्यं प्रसंसयदिना॥ ७॥॥ थतलालित॥ एग॥ येजंगमा
श्चानतथैस्थावरालि सर्व सत्वा सुखिनो भवंतु शाक्यारसयं नरदेव पू
जंवुद्धनमस्यहमिहालुस्वस्ति॥ ॥ येजंगमाश्चानतथैवस्थावरालि
सर्व सर्व सत्वा सुखिनोभवंतु॥ शांतविरागंनरदेवपूज्यंधर्मनमस्येहमि
हालुस्वस्ति॥ ॥ येजंगमाश्चानतथैवस्थावरालि सर्व सत्वा सुखिनोभवंतु
॥गणानमस्यंनरदेवपूज्यंसंघंनमस्येहमिहालुस्वस्ति॥ ॥ यानिहभू
तानिसमागतानिस्थितानि भूमांवथवांतरिक्षेक्रर्व मैत्रि सततं प्रजासुदि ॥७

सुसमाकचित्तकमलधरे॥ ॥वज्रसूर्य्य आस्तानेतोमा हँ विघ्नमय समरसदा
तोमहं॥ ॥रत्नाधृकवरेवज्रगीरे हे कालिठकराठकमारधरे॥ ॥शाश्वत ह
णिश्वभावपरम हँ शाश्वतसहजस्वभावधरे॥ ॥येदियेदि जिनजिक स ह
मये हँ कायनिबंधलोचकवरे॥ ॥हूँहूँ प्रस्ताधृकसमय हँ मेखलमणिड
नप्रणावकक्क॥ ॥हूँफट् आदित्यचरणावरे हे प्रणामामी सुगतवज्रगीतव
रि॥ ॥थतिअभेदतस॥ थतलि पिहारया गाछि सतन्दी नमस्कार ह
न ॥ रणमाला॥ ॥गीत॥ विश्वसरोरुह॥ ॥गाछिलिकाया॥ गीत॥ रा ह

ॐ गगनानीलावर्णा वंधिरे जोडामेरुमण्डलभवणा ॥ त्रिपंयउघरुहूंछा
डिोलसम्वर पयिसयिश्रूत्यभथारा ॐ हमविणाहिनी वज्रवाराहीजल
विछेदेखसिअंथारा ॥ गावंतिलिलावज्र खलियाठेरसतणुरुचरणाआ
राधे ॐ समयानन्देफलिगेलमण्डलसम्वरवज्रवाराही ॥ ॥ ॥ थनमुद्रा
नेतिया ॥ गीत ॥ राग ॥ विभास ॥ ताल ॥ माथ ॥ धर२ धर धराधरे ॐ धार
य२ चक्रि चिरे ॥ भ्रूं ॥ सर्ह२ वज्रभृक समय ॐ कुरुकुरु योगसुविरवरे ॥
कुरु२ वज्रधर समये ॐ त्वआलालिकरावल ॥ ॥ कराउलकुलिदेहधरेॐ

ठ स्थिरे चिया ँ ज्वलयि वज्रानर दह दिह दाह। ॥ सुगत भनि भावणि यान
दोयिरे स्वधा ँ सुरत वज्र भनयिया अचिन्तिय बोधा ॥ ँ ॥ ॥ थन मूल
नृत्ये॥ गीत॥ राग॥ गन्धा भैरवी॥ ताल॥ रूप ॥ त्रिभुवणा ज्वलित मूर्ति
अनणयन विनयवर्त्ति॥ ँ॥ नाचयि वज्र सत्व परमेश्वर नवर्त्ति॥ ॥ र
श्मि सहस्र कीरणा दश सूर्य्य सहस्र वर्त्ति॥ ॥ बहु विह रूप रवि शशि अनु
रायन सत्व वर्त्ति ॥ ँ ॥ ॥ थन मातृका पूजा॥ गीत॥ राग॥ भैरवी॥ ताल॥ र
कताल ॥ अकार संगत पृथिवन ईन्द्रे शिलिष पादप अशि तांगा भैरवा

॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥

॥ १९ ॥ ॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

ग॥ गंधा भैरवी॥ ताल॥ रूप॥ हरशिरमकुट किरतिमणिभास्वरचर
णयुगो॥ ध्रु॥ सोहियवज्रसत्व परमेश्वर परमपदो॥ ॥ गाढ रानिवद्ध पिथी
कथोत्कट दृढ धरू धरू॥ ॥ चारित्र फाराण संचारित्र लेकराठ कमलयु
गा॥ ४॥ ॥ मूलवृत्य॥ गीता॥ राग॥ भैरवी॥ ताल॥ सनि॥ एमहिमराठ
लमेरुसमुद्रा ई जेनथन यौभनउदकाविंदूचन्द्रा॥ ध्रु॥ प्रेखुरे अनुस्मिरु
लोयनगयते ई सुलपरिहासयिजिनगुणालाया॥ ॥ कराठ धारिइन्द्रिया
विषयसर्वयका ई समुद्रतरंगजिन एकअनेका॥ ॥ पवनद्वयिभेदियाद्व ॥ १९॥

लंकभैरवार्कजलदा॥ ४॥ नवर्गजातेएकवृक्षालोकरंजपादपंकोलभै
रवाएं कौमारिरक्तामहापद्मनागाअयनहासाप्रचण्डजलदा॥ ५॥ पवर्ग
जातेमातृहृदितिजेप्रकोरिपादपंउन्मत्तभैरवाएं वैष्णवीरयामाअन
लनागालक्ष्मीवनदुर्गासतपूरराजलदा॥ ६॥ यवर्गजातेभूगुरुवारे
अर्जुनपादपंसंहारभैरवाएं चामुण्डरक्ताकुलिकनागा घोरान्धकाला
क्तकजलदा॥ ७॥ शवर्गजातेअरायइशाने वर्मकपादपभिषणभैर
वाएं महालक्ष्मीश्वेता शंखपालनागा किलिकिलावावर्षराजलदा॥ ८

ॐ ब्रह्मायनी पिना वासुकी नागा चन्द्रोयभिषणा धूर्णितजलदा ॐ॥
ओं गणपतिकुमार महाकालश्चपाल योगिनीगणा ॐ म क्षमांस मस्यप
त्रविध पूजति गृह्णंतु खादंतुपिबंतुरे॥ १॥ कवर्गजाति नान्दिनथतदे पिच
ल पादपंचैराउ भैरवा ॐ रुद्रायनी श्वेतानश्वकनागा गहुलथमधानि गर्जि
तजलदा॥ २॥ चवर्गजातिविहारवस्तगो अश्वकपादप रुरुकभैरवा ॐ ई
ईन्द्रायनी ऊर्ध्वकेशाकर्कोटकनागा ज्वालांकुलाला नादितजलदा॥ ३॥ टवर्ग
जाति पर्वतसमेरुतकपादप कपिलभैरवा ॐ वाराहिरक्तापद्मभुजंगा क ॥३

सच ईं वज्रपाशबंधघातणकरणं॥५॥ समिरणामतेजगाछतस्थानईं ह
मएकलिछंनुअहुतहिदोषं॥ ६॥ यक्षगणराजा गच्छलंकापुरि ईं नाथ
थ हेखवआस्रावंधनकरणं॥७॥ रुद्रगणेश्वरणाचविघ्नकृतशक्ति ईं नाथ
आसाआयंतनजिवंतुयं॥ ८॥ अर्धउर्द्धभुवननाथ बलाबोमचिंमा ईं ख
फाधोर्द्धविध्वंतिभस्मीवकरणं॥ ९॥ वज्रवरनाम अहुकौंढराजा ईं दशादि
गस्थितमारत्राशनकरोमि॥ १०॥ वाछलिचरणोभुजंगातधरिया ईं गावंति
कुलिशाभीगीतचरिता॥ ११॥ ॥थनकिरणानाथा॥ गीत॥ राग॥ भैरवी॥ ताला॥

८॥ भैरवकाली पादभरणो द्वादशनयना आलिंग्यणाचंरं वेदवदनं
रविकरवदनं नमामिभीहिरुकभवभयहरणं॥ ॥ ॥ थनुजवरतृत्य
॥गीतराग॥कामोड॥ ताल॥ खडंकार॥ त्रियंत्रिसता थक्षियायिरेस
चिपति रं गच्छ स्वभुवणेहन हिंतिष्ठं॥ १॥ सत्रिकेराजालंघयि अ
धुना रं हमनहिवोलेपंथुमिवकरणं॥ २॥ जम्त्र भुवनेश्वरनतिष्ठंतु
लक्षिं रं अनुकोठआयंतुछेदनंकरणं॥ ३॥ प्रत्यंजनराजाअनुकरु
णामय रं हमभुजरिक्षंतु असिचन्द्रहासा॥ ४॥ ठरगाधिपतिपलायंतु ॥ २१॥

ईं पृथ्वीअसुरगणशोषनागादिकं भुचरिमागणकलयंति॥ ॐ॥ दहदिहदा
हहूंकारेप्रणामामिदशमहाक्रोधरे ईं आसापरिप्रयेदानपतिरेमारवि
घ्नरिवास्त्रे॥ ॐ॥ ॥ थनचण्डवीरनृत्ये ॥ गीत॥ कामोड॥ ताल॥ खट्कं
ताल ॥ प्रज्वलितहूंकारोभवमुर्त्ति ईन्द्रजीलाजकेशमदेहाईं विश्वाजष्ठि
न भृष्टिकरणां रत्नमकुटकोडायिपं॥ ॐ॥ नमामिश्रीप्रचण्डवीरंभव
सिंधुतकरणां ईं विश्वनाथत्रिभुवणाव्यापिता वेदारिध्वंसतकरणां॥ ॥अ
नन्तजादुष्ठित त्रिभुवणावीरं सव्येतृष्णखड्गधानं ईं वामतर्जनी हृदिपाश

॥ऋष॥ॐ खवज्र धृक वज्रहूंकारेकारिणिचिरि चापयि वारे २ सकलयो
अत्तरमहाक्रोधारे अल्लियवि घ्रसघ्रहरे॥ भ्रा॥ घघघारय २ सर्वदु
ष्टरे कीलय हूंफट्पापहरे २ॐ वज्रकीलय वज्रधर आज्ञाकायवाक्
चित्तकिलयंति श्रीवज्रसत्वआराधियारे अत्तरसिद्धिप्रदफल
मोक्षदा॥ ७॥पूर्वादिद्वारेकाकानतरे भिन्नाजद्युति घोररूपा २चखडि
यभिषणामहाश्मशानारे देवाधिपतिगणाकीलयंति॥ भ्रा॥उत्तरदिग
धारेउलुकानतरेश्यामवर्णानभीमतयनी २ रौद्रगहूरे महाश्मशाना ॥२

विघ्नहन्त्री ॥ ब्रह्महरिहरमघवनाशन दर्पदहनभ्रुवी ए ऐं ह्रीं क्लीं ब्लूं स्त्रीं क्लीं
नथर सर्वकिरणविघ्नहंत्री ॥ ॥ विविधिरत्नाभरणभूषित दिव्यरत्न॥
मौरि ऐं जगतवांछित सर्वसम्पति सिद्धिवरफलदायकी ॥ ॥ ॥ थन मू
लनृत्यो॥ गीत॥ प्रमोदिता॥ ॥ थन परिकर्म॥ गुरुमण्डल॥ गीत ॥ कल
शपूजागीत॥ अन्तर॥ ॥ अग्निस्थापना॥ गीत॥ त्रिरिलोयना॥ ॥ साम
क्रिपूजा॥ गीत॥ रक्तवर्णा॥ ॥ भूप॥ गीत॥ नमःकुं॥ ॥ देवचचा॥ गीत॥ रण
॥ शृंगारमारस्त्रि॥ ताल॥ साथ॥ त्रिचक्रविराशि मण्डलमाहेंस्थिति आन

थरंभवारिवाशसनवंधनकरणं॥ ॥नानारत्नाहारलौप्रणकर्त्ति मेखलभूषितदेहा ॐ
द्रष्ट्राकरालभिषमवदनं त्रिभुवनलाया प्रचण्डवीरं॥ ॥वीराधिपति सर्वभयहर
रां प्रेतपिशाचादि शमनं मनसा हूँ सुरनरयक्षादि वंदितपादं सर्वसिद्धि मोक्ष
फलदं॥ ॥ राग॥ हिंडोला॥ ताल॥ माथ॥ हूँकारसंजात रुद्रनीलसमद्युति दे
हा हूँ प्रोज्वालाज्वलसमद्युति ज्वालाकुलानलसमाकुला॥ ॐ॥ जयंतअचलअ
तिकमुर्त्ति खड्गपाशकरधारी हूँ जगतनाथजगत पालित मरकोथरणया॥ ॥
अवनिनि हितवामजात्र घोरवदनविलोचना हूँ केकरराक्षसभवभयंकर अखिल ॥२४॥

वसुवारा ह्रीं नृत्ये ॥ गीत ॥ राग ॥ धनाश्री ॥ ताल ॥ जति ॥ सर्वाशांता महा सूँ ए
लैं चछ आनन्ददेहा यँ त्रिभुवनाफलयि महाउड्डलाया चन्द्रसूर्यअं मोक्षि
या ॥ ॐ ॥ नमापसेनानलपरणलिना त्रिभुवनायकश्वरूपी यँ सर्वविकल्पवि
ध्वंसनीदेवी अनुत्तरस्तानवरदायनी ॥ ॥ अमिताभमण्डलवेदियारि स्थि
तिकल्यानसमिवरूप भारि यँ कर्तीकिपालाख लोग भारि अनुत्तानवरदेहा
॥ ॥ दिगंवरा मकुटकेशी चक्रिकुण्डलकरिठ भारि यँ रुचकमेखलायावरथा
री ग्रीवेरुडनरशिरमाला ॥ ॥ सर्वतथागतजननी देवी विरहितभावअभावा

न्द मूर्ति धरा हूं वज्र वारा ही आलिंगणा सम्वरा नानारत्नि मंडिता ॥ ॐ नि
नाहूं हूं तेनाहूं हूं तिनि हूं हूं हूं ॥ नील वर्णा वज्र कपालि खट्वांगिनी परमान
न्द मूर्ति धरा हूं वि[illegible] अर्द्ध चन्द्र जटा मुकुट धरा हाडाभरणा सुशोभिता
॥ वज्र यक्ष गज चर्म्म डमरु खड्ग विरूपानन्द मूर्ति धरा हूं कर्त्रि कपाल प
र्शु पाशवि शूल वज्र शिरे धरा व्याघ्र चर्म्म कटि वेष्ठिता ॥ दिगंबिदिगंबरा
काश्यादि यमडाकिनी देवी सहजानन्द मूर्ति धरा हूं नमामि श्रीचक्रसम्व
रा सत्य गुरु चरणा आराधिता ॥ ॥ यत आवृति ॥ गी ॥ ज्वलित वयानरा ॥ ॥ ॥२५॥

नोहर्ष सचमराउलआराधिता॥ ॐ ॥ ॥ वज्रवाराही नृत्ये ॥ गीत ॥ राग ॥ भृंगा
रमालश्री ॥ ताल ॥ माथ ॥ द्विभुजएकमुख रक्तवर्णोत्रिनेत्रां मकुटकेशादि
गंवरा ॥ ॐ तेनाहूँहूँ तेनाहूँहूँ तेनातेतेहूँहूँहूँ ॥ वामकरोटक दक्षिनकर्त्ति
रं हाडाभरणासुशोभिता ॥ ॥ सूर्य्यमण्डलमाझे नान्दवमुर्त्तिधरा रं वज्रम
रिउतविभुषिता ॥ ॥ सतगुरुचरणे शिरे गतथरा रं वज्रवाराही तेजुपायस
रणा ॥ ॐ ॥ ॥ थनपत्रभारा हाथको ॥ गीत ॥ कोलायि ॥ ॥ शिराहुनि ॥ गीत ॥
सर्वब्रह्म ॥ ॥ मूलनृत्ये ॥ गीत ॥ हाडाभरणा ॥ ॥ रागविभास ॥ ताल ॥ माथ

ईं श्रीवज्रयोगिनीचरणशिरे गत· गावेति समरसंवज्रा ॥श्रीश्री॥ सचपूजायाय
॥राग॥ कामोड॥ ताल॥ खड्गकपाला हूँविज संभव खसमदेहा· नमस्तेसदा
विंशतिरक्षणायरा ईं द्वादशभुजाविदवदेवा· द्वादशवर्त्तरक्तनेत्रं ॥ ॐ नमा
मि श्रीचिचकेश्वरं साभयभवभयहरणां ॥ ॥ चतुर्विंशति पीठेभ्यरूपं· रूपि
संवीरेवीरेश्वरा ईं चतुस्स्कन्धपरिवृता· देवीसंपुटप्रज्वलित शिखा ॥ ॥ प्रज्ञासंप्र
ष्टआलिकाली· पद्मकांता अतिसुन्दरा ईं द्वादशदेवी सुभावा· नमामिश्रीचक्रस
म्वरा ॥ ॥ सप्तशस्त्रचरणेशिरे धार्य्य भनयि गीता श्री वज्रकुलिशा ईं दानपतिरेम ॥२६॥

सम्मिरवीरेश्वरसम्वर मराउला॥ ॥ गोकुदहनविर मभुसुभश्वेते ४ँ करु
सालोयनवीय संहावे॥ ॥ बादशभुजथरियाचारिचउवदने ४ँ नीलसंख
वेगगरालंजुलीता॥ ॥ राग॥ गंधाभैरवी॥ ताल ॥ रूप॥ विदलपम
गुरुयमराउल महासुरवरिले ४ँ देवीवज्रविरासिनीनत्वशान्तचक्रे॥ ध्रु॥ पिर
यिरे महारसगोकुदहन ४ँ स्वर्ग मर्त्यमार्ग सत्वउधारणार्थी॥ ॥ वज्रवारा
हीआलिंगणागगरी ४ँ त्रिभुवणदेवासुरनरदेवी॥ ॥ पूजापूजेगुरुयाभि
शेष अजन्तरक्रिया ४ँ सत्वनरचित्त नवक्रियासमुच्चये॥ ॥ गुरुप्रसादे

॥ उदितातरयिया पवनयुता ॐ वरंमुद्दामकाशलंता ॥ भ्रू ॥ षोडशधार
भवधिसंतलीता ॐ अवयनिरंजन मोक्षलंकृता ॥ ॥ दिनकरमंडलमध्येग
ता ॐ करुणासूतरसैकसंकृता ॥ ॥ दग्धा आलिभोय प्रतिनिहंता ॐ देवासुन
रशिरेणामिता ॥ ॥ गावंतिपवनपति गुरुभक्ता ॐ वज्रवाराही नृंजुशिरेनमि
ता ॥ ॥ राग ॥ गौरी भैरवी ताल ॥ रूप ॥ विविहंविहनुरे मारविशाशिव
दूते ॐ देवासुनरभुवनहेतुकरुणा ॥ भ्रू ॥ नचिरेतमामिश्रीसंवरवीरा ॐ ६
वज्रयोगिनी रतिरेसहशृंगारा ॥ ॥ वज्रवाराही आलिंगणाकरेठ ॐ अवि ॥२७॥

रे यक्षाधिपति गणकीलयंति ॥ ॐ पश्चिमदिग्द्वारे श्वानाननरोसि
द्वरारुणनेत्रविकटरूपा रं ज्वालाकुलमहाश्मशानारे भूताधिपति ४
गणकीलयंति ॥ ॐ दक्षिणद्वारि गद्वारे शूकराननरे कनकनिभैरदे
हाघघरनादि रं कलंकभैरव महाश्मशानारे प्रेताधिपति गणकी
लयंति ॥ ॐ दंष्ट्रावरकोरोदिती यमडादिकुष्मपिनाभाप्रचण्डरू
पा रं अट्टहासमहाश्मशानारे तेजाधिपति गणकीलयंति ३
॥ ॐ द्वितीयवरकोरो यमदूतिरे पीतारुणनेत्रक्रोधरूपा रं लक्ष्मी

नद्र गति नाशनं रं भनयि कुलदत्त आचार्य्य चरिता ॥ ॥ ॥ राग ॥ पंचम
॥ ताल ॥ विद्रुत ॥ जय वाछलि हेरुव यनयि रं सयर सुरासुर जगत
उद्धारी ॥ ध्रुवतिहे भगवती पादुकमल महिमण्डल नौपुरितरासुरणाकार
हाडभसल आभरणावि भूषित मेखल घराठउलोरा रं विसिविरिणिविरायं
जिरिणिविनयना ॥ ॥ कर्त्री खप्परयीवेरुद्र नरशिरमाला रं कपिरव लांगवर
मकटेश्वरा ॥ शिरशिसिंदुररागे कज्जल स्फुला रं कस्तुरी कर्पूरमास्वल सु
खसारा ॥ ॥ भनयि सुरतवज्र वाछलि दासा रं श्रीवज्रदेवी प्रसादेन श्रीहे ॥ २८ ॥

ल ॥ दुर्लभाग ॥ आतसिक्त सुमद्रति देह प्रभाश्वरा रँ विविधि रत्न मणि मुक्त
टविभुषिता ॥ ध्रु ॥ नाचैरे श्रीअचलविरा रँ तेनाचउ आनन्द विरासयि अच
ला ॥ ॥ ओमउ भवविन्दु प्रभा दर्शना रँ प्रज्ञाआलिंगणा अभयमहासुहं ॥ ॥
विरागचन्द्र प्रतिभव भयंकरा रँ तस्यनिहत स्वभ्रनर्जनि पासा ॥ ॥ मारस्वत्र
दर्पणनिरविग्रहंता रँ रविशशि युगणात मगणाविरा सयि अचला ॥ ॥ राग
॥ मारव ॥ ताल ॥ माथा ॥ निजभुव अर भुव हेरुव लाया रँ श्री हुतगमने योग
गिणी पयि स्ये ॥ ध्रु ॥ आनंदादि देवा वाछलि आनंदादि देवी रँ परिना

वनदुतासन महाश्मशानारे राक्षसाधिपतिगणकीलयंति॥ ॐ॥ वायुवे
वरकोणेदेवी यमर्द्रीयेरुरुयमलकेलालवदनी रं घोरांधकारी
षणमहाश्मशानारेअनाथिपतिगणकीलयंति॥ ॐ॥ ईशानवरकोणेदे
वीयमर्थनीयश्यामरुग्णाभाविकरुपा रं रौद्रकिलिकिलाव महाश्म
शानारेअनाथिपतिगणकीलयंति॥ ॐ॥ऊर्ध्वचक्रवर्त्तिऊर्ध्वसंस्थिता
मारवि ग्रहरेपितदेहा रं ब्रह्मारविशशिगणसपरि खेचरमारगण कील
यंति॥ ॐ॥ संभराजकोढ अतिनीलवर्ण मूर्त्ति पाताल वासिनं मारहरणं ॥२३॥

रूप पाया॥ ॥६॥ ॥राग॥ कामोड॥ ताल॥ खडंकताल॥ अवनिनिहितजा
नु नीरसमदेहा हँ केकरचिनयन भिषमवदना॥ ॥तेनाहूँहूँ तेनाहूँहूँ हूँ
हूँहूँहूँ हूँहूँ जातअचलको थलाया॥ ॥निविडितघनद्युतिशोभित मंगेश
पाशखड्गधारीत्रिभुवणनाथं॥ ॥हरिहरब्रह्मा ईन्द्रचउमाराहँ मारविघ्न
द्युतिशत्रुभयहरणा॥ ॥विविधिरत्न मौलीलेकृतदेहा हँ जगतविवांछि
तवरफलदायकं॥ ॥६॥ ॥राग॥ कामोड॥ ताल ॥ खडंकताल॥ अवनिनिहि
तवामजानु खड्गकिरणेमारसंचाशा हँ रागद्वेषमोहवंधिपाशा त्रिभुवणा

॥८२॥ ॥ ॥८३॥ ॥

॥३०॥ चंतिहेरुव मनसा संपूर्णा॥ ॥पुक्कसिंतहिभरु निजकुल हेरुव रं सवरि
अनेहाभीव यि संतोके॥ ॥श्रीवडियाने योलयीचञ्चाली रं गीतअनेहाक्रिडं
निवाजंति॥ ॥आलिकालीडुयि पादधरिते रं एचउयोगिनी मंगलगीतो॥
पयिसयिदोवि अद्वयसंभावे रं क्रिडंतिकमल कुलिशवज्रभिवे॥ ॥यस्मा
धोरि चौरि वेतालि रं लेपनचउसमहेरुव बोला॥ ॥ ॥वाहिलहिय गी
त॥ विहंडा॥ राग॥ गीत॥ चक्रिकुण्डल॥ ॥संहार गीत॥ जयंजयं
॥ ॥थनजमुनितस्यं॥ अभ्यंतरप्रवेश॥ गीतसंविनी॥ थनमुद्रालोय॥ ॥३०॥

लाया अचलवीरा॥ ॐ नमामि श्रीचराउ महारोषणा जात मृत्युभय से
क्षिता ॐ विश्वनाथ विश्वव्यापिनं वीरवीरनाम महाक्रोध लाया॥ ॥अ
ति भीषणा गाउ क्रूप्रचराउ डं ब्राकरालया विन्दूति रणा ॐ पीडित अथ
रक्षिकरणाय ना वैरी संचाशा एतहु सरणा॥ ॥ माधव मायासुरं दख
लारौद्र पिशाचा पादव भरणा ॐ समरसमाया रागविमोहा ज्ञानलाया
समोहित देहा॥ ॥ रत्नाभरणा प्रज्वलित मौलि केयुरनौपुरहुणाकुणाका
ॐ सुरनरनागवंदिवरणा रायसुरा अचलवीरा॥ ॥ राग वसंत ॥ ता ॥ २९

गित भले ॥ राग ॥ ललित ॥ ताल ॥ रूप ॥ सोदशंहायन नरुणा
किपोशिलवासा नाभितो राजयहारा ॐ हडमार आभरणा किमिति तुंज स
रयणा पावन सिरमुनि यहारा॥ ॐ॥ देवी कपिलालि यालिमिनि तुंज रान
सारिरा ॐ रहिनी आलिमो हाधरसि विरिरा निशिनयन अति गरुवी
॥ ॥ निरंसुतमणल मरिच शशि नता या अगस्त्येश्वरसि नवकपाला
ॐ कर्तीकपाला ॐ खडांग मृगहारा पंचसिजयामकुटकेशकरिया॥ ॥
पंचतथागत हृदं सिचउदेवी वज्रनिथदेवी पाचनीजयं ॐ जगतमारू

श्री मंत्र यात्र परिभ्रमिरे ॥ ॥ प्रणादिरे दह दिह्मि वज्रे दिक्षानेजगातउद्धारले ॥
रं सपेरवज्र हिया एकलायानिजविजचापतिभ्रमिरे ॥ ॥ गुरुउपदेशोसिद्ध
यिपुंगले माकरुचित्त विभंगरे रं शातगुरुचरणोशिरेंगतथरिया भनयिसु ॥
रतवज्रगुरुनात्वरे ॥ ॥ ॥ थनसतिखुरु सचचा मालकोहाले ॥ ॥ थनलि
गणात्वकयाय ॥ गीत ॥ गजजिन ॥ ॥ रागनिवेद ॥ ताला ॥ माथ ॥ अखय ॥
निरंजन अक्षयअनुपम गगणकमल जेसाधना रं शून्यताविरणशिल राय
श्री चियादेवी प्राणविन्दू समजोड़िता ॥ ध्रु ॥ नमामिनिरारम्भनिरक्षरशोभा

णा सतं सय रज गताय सि स मोथी अप कोतिय ॥ भवड: ख भेतम विन
य सुरतवज्र क स्य जाउ देवी गुरु प्रशादे हं अवियवियचिन्दि स्वजहु नाथि ः
ननती भावअ भावे ॥ गणाचक्रस ॥ गीत ॥ राग ॥ भैरवी ॥ ताल ॥ क
कमाल ॥ भास्वर षड मुह वज्रचित्तरे धर्मोदया परि भूमिरे हं कुटागार मनो
हर मण्डल वज्र धातु हिया कमलवरे ॥ भ हृष्ठ भावंतुरे हिया हृदय कमल ः
हिये चक्करे हं कृद्धि सिद्धि कर विघ्न विनाशन होयिरे महामुद्रा सिद्धिरे ॥ आः
दिवज्र हिया शशिधर मण्डलवि रासयि ख हेदा चक्करे हं नीलवर्ण शिरे गत ः ॥ ३१ ॥

मुद्रत्रिलोयनसमरसुहवे ॥ ध्रु॥ भावयिरेभी योगांवरवीरा रं योगिभी
जालेकरुणोयाचयि॥ ॥ डाकिनीमण्डलचक्रफलायिया रं मराउलकोरो पू
जकयिया॥ ॥ वज्रीयोरिवियारिचराउारि रं सिंहिनी व्याघ्रिणी॥ ॥ डाकि
नी छिपिनीचउसिकवोजनी रं सयेरसमरभयेवंधनमोचयि॥ ॥ राग
॥ सारव॥ ताल॥ साथ॥ वज्रीयोखिवेताली चरणारीदेवी रं सिंहिनी
व्याघ्रिणी यंवकउरुकिनी॥ ध्रु॥ नमामिश्री योगांवरस्यानेश्वरी या रंत्रि
रोनेत्रदेवी त्रिभुवनपायिस्ये॥ ॥ पूर्वउत्तरपश्चिमदक्षिणादिगदेवी

हेतुकरणासंप्रापिता ॐ सरश्चन्द्रमतेजप्रकाशितजलजचन्द्रसमव्यापि
ता ॥ ॥ खड्गयोगांवरसाधिश्चक्रवर्ति मेरुसमाउलभमतालिना ॐ निर्म
लहृदयाचक्रध्यापित अहिनिशिश्चरदंत समयसाधना ॥ आनन्द
परमानन्द विरमासहचुतानंदेसंभवा ॐ परमाविरमासहेनछादिरम
हासुखसुगतसंपदवरप्रापिता ॥ ॥ हेवज्रकालचक्रसम्वर अतंतासिद्धापार
गता ॐ श्रीहेवज्रओदियाने पूर्णागिरिजालंधरि प्रभुमहासुखजानहूँ ॥ ॥
॥ ॥ राग॥ कर्णादि॥ ताल॥ रूप॥ निर्मलगगनतुसोहितआगे ॐ चि ॥ ३२ ॥

भिशेष ईं प्राणेश्वरी संसार समुद्रा ॥ ॥ राग ॥ मारश्रि ॥ ताल ॥ मा
थ नमामि २ श्रीवज्र योगिनी ईं तरुणी मण्डल मध्ये प्रज्वलित देहा ॥ ध्
नौमि श्री वज्र योगिनी लोहित वर्णाभा ईं अज्ञान बोधि प्रदायनी देवी ॥ ध्
॥ ॥ चिच्छक्ति व्यापिन दहिन कर्त्ति धारी ईं सहजानन्द रूपिनी देवी ॥ ॥ ६
कृपांगा मनोहर मण्डला ईं वाम खण्ड कपाल खड्गधारी ॥ ॥ रक्त धर्मोद्
याचा पयि तान्तव ईं प्राणा मामि वाऽऽ ज्ञा गुह्येश्वरी ॥ ॥ ॥ राग ॥ ताल
॥ ताल ॥ जयी ॥ उदयागिरि तलं गलि सेकासा ईं कलिशक रोरक

ँ डाकिनी शाकिनीचउसिकं वोजनी॥ ॥ चतुर्दिगंतुल फलतुदेवी ँचि
णिनेत्रदेवी नाचंतिदेवी॥ ॥ हरिहरब्रह्म इंद्र असुरगमते ँ षोडश
योगिनीसमरसंभावे॥ ॥ राग॥ मात्रि॥ ताल॥ माथ॥ वज्रयोगि
नी हेरुवलाया ँत्रिभुवणनाथ देहिमेप्राणी॥ फ॥ पिवयिरे महारसम
हासुख खेलयिया ँ वज्रदेवी फलीया अनुत्तरज्ञाने। ऊर्ध्वनारीचिदल
कमलसंयोगे ँ देहिविरागे पवनसंभेदयिया॥ ॥ भुंजयिरे पंचमु
ख खेलि ँपंचशिरसे विजवारुणी॥ ॥ सत्यगुरुचरणप्रसादे चतुर्थी ॥ २१॥

॥ २१॥

धारितदेवी॥ ॐ॥ मकुटकेशविशिलोचनीदेवी रं तुलदेवी भास्करविद्या
॥ आलोलिवाचकुटदयारेस्थिति रं मेरुप्रदक्षिणादिनरावि॥ जगत
रेवाक्षित परिपूरिता रं तुलदेवीमादितावि द्याधरीदेवी॥ मुक्तिरेभेदर
जनीसंधिस्थि रं क्षणापिछिठदक्षावनेश्रुक्षरका॥ सेहारकर्त्तभि
क्षिसंकर्त्ता रं तुलदेवी मुखेणविद्याधरीदेवी॥ मर्त्यपातालविभुवना
चक्षु रं तुलदेवीरत्नसर्वदेवहृष्ट॥ त्वंजातिउदयामवदेवनेहृष्ट रं तु
लदेवी भासुरविद्याधरीदेवी॥ रश्मिपंचवर्णाछुलिरक्षता रं रक्षतिमिर ॥ ३४

सर्वसत्वनस्था॥ ॥ स्वरश्मिरतिकरसर्वसत्वनहृष्ट रं तुलदेवी दिवाकर
विद्याधरिदेवी॥ ॥ त्वंदेवीभूतखराउश्रुक्षपशक्रुध्न रं तुलदेवी खादिरे
अनन्तस्यदेवी॥ ॥ देवारिपाशखड्गुरुठपदेशे रं तुलदेवीकरवीरवि
द्याधरिदेवी॥ ॐ॥ ॥ राग॥ करणादि॥ ताल॥ रूप॥ श्रीहेवज्रवैरात्मादे
वीविभुवनानाथ रं पंचजितव्यापिना पंचवर्णवंदेहा॥ ॐ॥ नमामि २ श्री
गिरुच्छायचैत्या रं हेरुकश्रीगुह्येश्वरीवज्रयोगिनीभूम्यना॥ ॥ पूर्व
दिगास्थित भैरवनीलवर्णा रं दहिनपात्रधारीवामविंदूथरा॥ ॥ घरुमरि

मारसंवासकरणं ॥ ॐ सुभनीसुभनीहूँफट् गृह्ण२हूँफट् गृन्ह
पयहूँफट् २ ॐ आनयहोभगवन्वि द्याराजयहूँफट् खोदय२अभि
खेदेय॥ ॥ हातकरणियचित्तडङ्गिय वज्रप्राकार हूँवहूँ २ अष्टदि
गमारपरायतेरे सर्वविघ्नक्षयकरेरे॥ ॥ गगणनिरोधकुलिश
निवासय वज्रविताडयहूँ २ वज्रपंजलहूँ ज्वलितागिनवज्रज्वलजाल
ञ्चसंञ्च॥ ॥ क्रीडन्तिमणडलेश्वरीवज्रेश्वर सत्वहियाप्रमोदकर २
सत्यसत्यआज्ञाशिरेगतधरिया भनयिलिलावज्रस्वयरे॥ ॥ मूलतृत्वे

चौरी योगिनी देवी रं गावंति निरावज्र हूंकार संवश्या ॥ थन ॥ गी
त ॥ विषय ॥ ॥ शोषवलि विय ॥ गीत ॥ प्रमोदित ॥ उपमालको हा
ले ॥ ॥ विश्रामएउलस ॥ गीत ॥ संविनी ॥ थुतिसिद्धामतया चचा क
राठसिध्यकाम्रुल ॥ ॥ थनंजिकिराणादिशाया चचा करठ आरम्भ
ज्रल ॥ ॥ ॐ नमः श्रीचक्रसमराय ॥ ॥ थनभ्रमिस्वथनसगीत
॥ राग ॥ मधुमत ॥ ताल ॥ दुर्ज्जमात ॥ वज्रमयभ्रमि शोधिय मराउल
वज्री मेदिनीवज्री भव वज्रबंधन हूं २ सकलसातरभूमिनिवासिय ॥ ३५

कलशाधिवासना ॥ गीता ॥ राग ॥ भैरवी ॥ ताल ॥ एक ताल निर्म्माना तु
मध्ये गत कलेशा पंचामृत मय परिपूरिता रं विंध मय गर्भित पंच पचा
रे नील वर्ण रज सिरशि स्थापिता ॥ ॐ ॥ हूं हूं कार हूं वज्राचार्य्य मंत्र विन्या
शित कर्म्म वर्जि सहिता प्रज्ञा स्वरूपिनी रं वज्र शिष्याभिमत परि पूर्णा हि
तुना भव समुद्भव तरणानि मिल हरणा ॥ ॥ पूर्व दल गत पंच सूत्र संराजिता
पंच विंशति भेदित वज्र कार्य्य रं दक्षिण दल गत वज्र खसमश्च रूपं
त्रिभुवना समरं सयाय विशुद्धि ॥ ॥ पश्चिम दल गत सौख्य शोधित ध्व

गीत ॥ त्रिभुवनजनिता ॥ किरणाताय ॥ गीत ॥ ॐ खवज्रधृक ॥ अं
कपु ॥ थन मूल नृत्य ॥ गीत ॥ प्रमोदित ॥ वसुंधराधिवासन ॥ गीत ॥
॥ राग ॥ मलार ॥ ताल ॥ माथ ॥ गंधमण्डल मध्ये वंकार संजाता ॐ त्रिभु
जएकमुख पृथिवीदेवी ॥ ॐ एह्योहि महादेवी पृथिवी माने ॐ सर्वरत्न
संपूर्णविभूषिता ॥ पीतवर्णासौम्यरूपिनी देवी ॐ सर्वभयकरलोके
सडारणी ॥ कनकभद्र घराऊवा मरुभारी ॐ सव्यकर अभयलोकसंता
रणी ॥ दिव्यालंकार भूषितदेहा ॐ हारतोपरातिर्योष वसुंधरा ॥ ६ ॥ ३६

चिहंडा॥ ॥ गणाचक्कस॥ गीत॥ भास्वर॥ ॥ थुतिकिरणा खुद्दु याच्चा क
राठसिथयकाजुल॥ ॥ ॥थन अट्ठमिदनेखुद्दु याच्चा आरम्भाय गु
जुल॥ ॥नन्दितमस्कार॥ ॥ रागमाला॥ ॥ विश्वसरीरुह॥ ॥ चिसमाधि॥
गीत॥ अनिल॥ ॥ कलशपूजास॥ गीत॥ अर्जुन॥ ॥ मामकीपूजास॥ गी
त॥ रक्तवर्ण॥ ॥ धूपस॥ गीत॥ नमस्कार॥ ॥ देवपूजासच्चा मालणहाले॥
वाहिलहिस॥ गीत॥ चिहंडा॥ ॥ गणाचक्कस॥ गीत॥ भास्वर॥ ॥ थुति अ
ट्ठमीदनखुद्दु याच्चाकराठसिथयकाजुल॥ ॥ ॥थनलिद्रवियखुद्दुसा॥ ॥

रवर्णासिधिरसभाजिता ईं ऊर्ध्वदलगत घण्टा घोषणादिता · ज्ञानस्वरू
पिणी विश्वजननी ॥ अग्न्यादिदलगत शोण · पीतारुणारक्त श्यामवर्णा
रजथपियारे ईं पुष्पविनाशितविधमय पूजिता · प्रणामामिवज्रसत्वसिर ३
सोयिता ॥ ३६ ॥ ॥ थतमण्डलाधिवासनस ॥ गीत ॥ विचक्र ॥ गुरुमण्ड
लस ॥ गीत ॥ मध्येमेरु ॥ विसमाधिस ॥ गीत ॥ अनिल ॥ कलवापू ३
॥ गीत ॥ अजुत्तरा ॥ मासकीपूजास ॥ गीत ॥ रक्तवर्णा ॥ थूपस ॥ गीत
॥ नमस्कृ ॥ देवपूजास ॥ गीत ॥ सालगुहाले ॥ वाहिलदियस ॥ गीत ॥ ३७

यात नयोत्तम देहि चिन्तामृत पातरते ॥ देशयिश्वरहम गोच्च गुरुयेनथनात्तुत्त
रबोधिपदं ॥ ॐ ॥ सर्वतथागत पूजनयाय यातयामि मे पापतत्त्व ईं पर्य्युपा
सादिक्षितपरिवेष्टितकमलकलिश प्रविश्रमरे ॥ ॐ ॥ कुशुमदकमुकुशानि
कमला जिनकुलसमयाचर्य्यपदं ईं मंत्रादिजनदर्पणासरक्ष पदशवलम
नि पदभासुरं ॥ ॐ ॥ नमामि २ श्रीकुचशम्बरगुरुवाक्ये हृदुधारिया ईं सत
गुरुचरणकमलप्रशादे अनुत्तरसिद्धि पदमोक्षफलदं ॥ ॐ ॥ ॥ शिष्यावे
सयाय ॥ गीता ॥ हूं हूं हूं नमः हूं ॥ ॥ थनगु लाभिशेष ॥ वियगीत ॥ राग ॥ ४

॥ अभ्यन्तरसः ॥ नन्दिनमस्कार ॥ रागमाला ॥ थनगीत ॥ विश्वसरि
ह विसमाधि गीत अतिल कलशपूजास गीत अनुत्तर मा
मकीपूजास ॥ गीत ॥ रक्तवर्णा ॥ धूपस ॥ गीत ॥ नमःहुँ ॥ देवपूजास ॥
चचामालहालि ॥ थ्रतिअभ्यन्तरसंज्ञल ॥ थनेलि शिष्यनंजसुतिका
तसें ॥ अभ्यंतरप्रवेशायये ॥ सुलनृत्ययायगीत ॥ राग भैरवी ॥ ताल ॥
एकताल ॥ प्रविशन्तु भगवन्तः महामोक्षपुररे दर्शियि अनुत्तरबोधिपदं
जरमरणाभयबंधनमोचये परमतृप्तयपरमगुरुं ॥ सहिवत्समहा ॥ ३८

यिरेजोयिया सहजानन्दसेयेरविलासयियेपरिभोके॥ ॥गयतेमयतेत्ति
त्तविलाशयिया रैकायवाक्चित्तएकुकरिया॥ ॥एकेधावयिआत्तेयल ६
यिया रं आवधिरेयातगाथोरि॥ ॥यावयिरेगुरुपायप्रशादे रं भनयिवा
कवज्रभूम्यसमाधि॥६५॥ ॥थतमुद्रापूजाभूम्ये ॥गीत॥ हाडाभरण॥ ॥६
मुद्रानन्तियेत॥ गीत॥ धरथरा॥ ॥थतवीरवर्म्मासि॥ गीत॥ चक्किकराउल ६
थतसत्यपूजायायेत॥ गीत॥राग॥ नाटा॥ताल॥ जरि॥ कवतेरुपलोकेश्वर
कवतेरुपवेकं रं अवयतिरजेत सयारविभुक्तं॥ ध्रु॥ नाचयिअवधूकातक

नाद ॥ ताल ॥ जरि ॥ सहजसरीरुंह हेरुवलाया ईं त्रिभुवणानाथ देहि ई
विरासा ॥ ॐ ॥ भुजयिमहारसयु ह्यामिशेष ईं कमलाकुलिशसंयोगसं
भवा ॥ ॐ ॥ ऊर्ध्वाधोवणादिरुधिया प्रवेशा ईं प्राणाविंदुसमहासुखदा ध
ना ॥ ॐ ॥ रात्रेश्वररूपिनी देवी विश्वव्यापिनी ईं क्रीडतिसरणामहासु
खदाता ॥ ॐ ॥ एतत्त्रिशरा अद्वयतरकया ईं देहिमे माता संसारसमुद्रा ई

॥ ३९ ॥ थत सह भोजनस ॥ गीत ॥ राग ॥ मालश्री ॥ ताल ॥ साथ ॥ वामा
देहिनेयेडयिधरणी ईं मम्मेविरासयि महासुखखेलिया ॥ ॐ ॥ भुंज ॥ ३९ ॥

लहु २ हुमम्मरभु छेड्डा रं त्रिभुवणनाथ एकु सम्वरलाया॥ ॥ नाचअ ॥ ६
भावाभावकृताहतिमतिचित्तो रं अनुपम सुखरस मग्नसुखचित्ता ॥ स ६
स्वरा ८ ६ ॥ ॥ थतसुज्ञातोय ॥ गीत ॥ सोदरांहा॥ ॥ थनतथागतच ६
र्य्यास ॥ गीत ॥ राग ॥ तोदि ॥ ताल साथ ॥ सुपति संडित मुणउलचकं रं ठ
क्रित छत्र पताकविभातं॥ ॥ सुपतिनादितनर्त्यमनेकं रं तदुचगीतच
रिणामनोज्ञं॥ ॥ पंचवर्णात्मक सर्वयशोयं रं प्रथमकुनाटकुचितकुदिव्यं
॥ ॥ नाट्यादिएक महासुखनाथा रं नित्यंत गीतमनेकरसनं॥ ॥ श्रा ६

माते २॥ ॥ सकलजगतगुरुसम्वरवीरा ३ अनुपमकरुणाकरिनोसुखचि ३
॥ ध्रु॥ सम्वरसम्वरुरुमयितोषं २॥ खड्गांगडमरुगीवेनरशिरमाला ३
नाचअ॥ ॥ विविधिविकल्पविनाशनरुधं॥ सम्वर॥ ॥अकलशेतिरंजन
अकलविहेता ३ अनुत्तरधतगतिसयरविभुक्ति॥ नाचअ॥ ॥देवीवा ३
राहीजलमणिदेहा ३ भवभयहरणाशालविशेषो॥ सम्वर॥ केहुवोले
हेवज्रकेहुवोलेनिरा ३ अवधुवकान्हुगतिसहअभूत्मेद्रो॥ नाचअ॥ स
कलविघ्नहंतिमेतिपतिरुणा ३ रतिपतिस्वर्गतिवासनरुधो॥ सम्वर॥ फ ॥४०॥

प्रशस्तो॥ ॥ गंगाजमुणा येदुयिनंति रं शोषिलेरविशशि गगणाद्वारे ॥ ॥ ॐदिगीरचन्द्रारविअस्थागे रं गगराशेषमाहे ध्रवराहे राजेरे॥ ॥पव रापंचवीरेयेकरवंधारं विपरितकरमेदारकासिद्धा॥ॐ॥ ॥थुतिद्रविनायापू र्णायात॥ ॥थसानसाहुतियाचचाकराठआरम्भजुला॥ ॥गुरुसराखलस॥गी न॥मध्येमेरु॥ ॥त्रिसमाधिस॥गीत॥अनिल॥कलशपूजास॥गीत॥ ॥अन्तर॥ ॥अग्निस्थापनस॥गीत॥त्रिणिलोयत॥ ॥सामकी पूजास॥ गीत॥रक्तवर्णा॥ ॥धूपसगीत॥नमहूँ॥देवपूजास्वचासावणुलेहा॥आ

वकयातमिसिस्त्रिनभिश्रोयं ह्रँ मायचरिअथनलचरिचरं॥ ब्रह्मचरि
चरुद्रगणेशं ह्रँ एवनिरातभवितश्चस्वयम्भु॥ वर्द्धतुर्यैतजदायरि
मुक्तितेनब्रह्मं ह्रँ ब्रह्मविभावनयाविपरितमिदसकलं॥ तेनाहूँहूँ॥
हूं तेनाहूँहूँहूँ ह्रँ तेनातेतेहूँहूँहूँ॥ ॥ थतमणवलप्रदक्षिणायाय॥ गी
त निजंभुवा॥ वाहिलाहिये॥ गीत॥ विहंडा॥ शिष्यश॥ गीत॥ ए
ग॥ वलादि॥ ताल॥ रूप॥ कोइले वंशावाजिलेविणा ह्रँ अउहनसर्वदेवचि
श्रवणारिणा ॥ अनुभम पूजिलेशाकरैया ह्रँ भैरिरैक्रांक्रि सिद्धिरोहि ॥ ४१ ॥

गीत ॥ त्रिशूलराजवलित ॥ ॥ बलिपूजास ॥ गीत ॥ राग ॥ भैरवी ॥ ताल ॥ एक
ताल ॥ चन्द्रोग्रमशाने शिलिषवृक्षावासुकिनागा गर्जितमेघा रं गहूलमशाने
अस्वकक्षा घूर्णितमेघा क्षतकनागा ॥ ध्रु ॥ इन्द्रयमजलयक्षभूतवन्हिवा
युराक्षसदिगविदिगवलिदेवतिरे रं अस्थमशाने क्षचिसंवीरेश्वरं नाचयि
सहजानन्दरे ॥ ॥ कंकरिघोरं वर्जितमेघा ज्वालाकुला कर्कोटकनागा रं
कलंकभैरवा वर्जितमेघा सरासिजनागा चुरकवृक्षा ॥ ॥ अटटहासा रं
खपालनागा प्रचण्डमेघा वर्त्मसहिरुहा रं लक्ष्मीवानहुतासाकरवृक्षा घूर्णि

हुतिविय ॥ गीत ॥ ज्वलितवज्रानर ॥ मांसाहुतिस ॥ गीत ॥ कोलाई ॥ आ
छिलहियेचचा ॥ गीत ॥ हाडाभरणा ॥ उपमालकोहाले ॥ वाहिलाहि
ये ॥ गीत ॥ विहंडा ॥ चक्किकराउल ॥ संहारसगीत ॥ जयंजयं ॥ गणा
चक्र गीत भास्वर थनेदविनापूर्णायाचचाकराठसिधयकाजुल
॥ ॥ थनंलिरजप्रवाहयाचचाकराठआरभयायगुजल ॥ गुरुमराउ
लस ॥ गीत ॥ मध्येमेरु ॥ विसमाधि ॥ गीत ॥ अनिल ॥ मासकीपूजा
स ॥ गीत ॥ रक्तवर्णा ॥ धूमसी ॥ गीत ॥ नमःहूं ॥ देवचा सकुलपूजा

शोभा ॐ पुष्टिकलक समाङ्गलवयते॥ ॥रौद्रमहावलि पितृवनगयने ॐ
मद्यमांसमेरुधिरआहारे॥६४॥ थनशोषवलिविये ॥ गीत ॥ प्रमोदित॥
उपमानकोहाले॥ ॥ खेमामएडलाथिले ॥ गीत॥ संविनी॥ ॥ थनेरजप्रवा
हुक्कर्मयाचचाकराठसिंयकाजुल॥ ॥ थनलि सिन्हाकुंकुयाचवाक
राठआरभजुल॥ ॐ नमः श्री वज्रवाराहैः अभ्यंतरसभूत्वे॥ ॥चुर्णक
त॥ थनगीत॥ हाडाभरण॥ ॥ थनमुद्राभूषण॥ गीत॥ धरधर॥ ॥ गाछि
सनंदिनमस्कार॥ ॥ थनरागमाला॥ ॥ गीत॥ विश्वसरोरुह॥ ॥गीत॥

मेघा महापद्मनागा ॥ घोरश्मशानिपक्वजिवृक्षा अनन्तनागा पूरणमेघा
रँ किलिकिलावा अर्जुनवृक्षा कुलिकनागा वर्षणा मेघा ॥ द्वादशभुवना चउबलवदना द्वादशनयना रँ भनयि कर्णा पा रावडु सम्वरकाली रात्रीरिप्र
चापयिवदना ॥ ॐ ॥ ॥ थनधुमांगारि पूजा स ॥ गीत ॥ राग ॥ अंधाभैरवी ॥ ह
ताल ॥ चस्यति ॥ धुमांगारीचन्द्रकारि रँ भिषमपिंगलकेशवयने ॥ ॐ ॥
भुंजयिरे हूँहूँफट्करणे रँ नानाविहारौद्रमहाबलिपूजा ॥ समयारक्षतु
योगांवरदेवा रँ वाहुरिवाहुर चउमुखनयना ॥ शितएकलंकक्षत्रावलि ॥ ४३ ॥

यत्न॥ ॥ मामकीपूजास ॥ गीत ॥ रक्तवर्णा॥ ॥ धूपस ॥ गीत ॥ नमःहूँ॥ ॥ ३
देवपूजास ॥ गीत ॥ निर्म्मलादि॥ ॥ आहुतिविय ॥ गीत ॥ ज्वलितवह्नानर॥ ॥ ४
मांसाहुतिस ॥ गीत ॥ कोलाई ॥ शिराहुतिस ॥ गीत ॥ सर्वाङ्ग ॥ थलतत्यका
सें ॥ सालिलहिये ॥ गीत ॥ हाडाभरण ॥ थलश्लोक ॥ उपमालकोहाले ३
वाहिलहिये ॥ गीत ॥ चक्किकराउल ॥ संहारयाय ॥ गीत ॥ जयंजयं ॥ थलमू
लमृत्यकासें अभ्यन्तरप्रवेश ॥ गीत ॥ डंविनी ॥ थलमूत्रालोय ॥ गीत ॥ सो ४
दशंहाय॥ ॥ गणाचक्रस ॥ गीत ॥ भास्वरखराड॥ ॥ थोतिसि हाखुनुयाचचाक

हरसिरा ॥ गीत ॥ समद्दि मराउल ॥ गीत ॥ त्रिभुवराजलित ॥ थतआवि
सगीत ॥ नमःहूं ॥ शिष्यनंपरिकर्म्मनं वज्रवाएहीदेगुलियायके ॥ थतगु
समराउल ॥ गीत ॥ मध्येमेरु ॥ त्रिसमाधि ॥ गीत ॥ अनिल ॥ सामकिपूजास
गीत ॥ रक्तवर्ण ॥ धूप ॥ गीत ॥ नमःहूं ॥ देवचचा ॥ गीत ॥ निर्म्मानादि
थतसचपूजास ॥ गीत ॥ कवने ॥ सकलज ॥ थतंलिखिरादुतियज्ञया
करणसमाप्त ॥ गुरुमराउलस ॥ गीत ॥ मध्येमेरु ॥ त्रिसमाधि ॥ गीत ॥ अ
निल ॥ फलशापुजास ॥ गीत ॥ अजुत्तर ॥ अग्निस्थापनस ॥ गीत ॥ त्रिसिलो ॥ ४४ ॥

गुरुमण्डलस ॥ गीत ॥ मध्येमेरु ॥ ॥ रहस्यपूजा ॥ गीत ॥ निर्म्मानादि ॥ ॥ पंच
कुम्भपूजा ॥ गीत ॥ गोऊद्दहन ॥ ॥ षट्योगिनीपूजास ॥ गीत ॥ षट्योगिनी
॥ ॥ अस्त्रशमशानपूजास ॥ गीत ॥ ॐ आंहूंफट् ॥ विसमाधि ॥ गीत ॥ अनि
ल ॥ कलसपूजास ॥ गीत ॥ अनुत्तर ॥ ॥ सामग्रीपूजा ॥ गीत ॥ रक्तवर्णा ॥ ॥ धू
प ॥ गीत ॥ नमः हूं ॥ ॥ देवपूजावत्सा ॥ राग ॥ विभास ॥ ताल ॥ साथ ॥ द्विभुज
एकमुखरक्तवर्णा ईं नग्नमकुटकेशत्रिलोचना ॥ ॐ ॥ नमोदेवीडक्कडाकिनी
विश्वजननी ईं विभुवना व्यापित जिनज्ञानदायनी ॥ ॥ दक्षिनकरवज्रविलासित

राऽजुल॥ ॥ सिन्हाकोकाय खुन ॥ समर्ती पूजाधुलकाव ॥ सिन्हखांकाय क
लशाभिशेष मऊयाभिशेषसमस्तंधुनकाव ॥ कांशपाव जादिये ॥ गीत ॥ धरथ
र॥ ॥ सालिग्रहन ॥ गीत ॥ हाजाभरण ॥ उपमालकोहाले ॥ संहारगीत ॥ जयंर
* थनमूलनृत्येकास्यें अभ्यंतरप्रवेश ॥ गीत ॥ हांविति ॥ थनमूजातोय ॥ गी
त ॥ सोदशंहाय ॥ ॥ गणाचक्रश ॥ गीत ॥ भास्वरखराउ ॥ ॥ थवोसिन्हाखुनयाच
चाकराठ* ॥ गणाचक्रस ॥ गीत ॥ भास्वरखराउ ॥ ॥ थवोसिन्हाकोकोयखुनया
चचाकराठ समाप्तजुल ॥ ॥ सिन्हमोकुयखुनयाचचाकराठ आरंभजुल ॥ ६ ॥ ४५ ॥

चचाकराठजुल ॥ ॥ गुरुमराउलस ॥ गीत ॥ मध्येमेरु ॥ ॥ पंचकुंभपूजा ॥ ६
गीतगोक्षिरहन ॥ त्रिसमाधि ॥ गीत ॥ अतिला ॥ ॥ मामकीपूजा ॥ एकवर्ण
॥ धूप ॥ गीत ॥ नमःकूं ॥ देवपूजायाचचामालगुहाले ॥ सालियहरण ॥ ६
गीत ॥ हाडाभरण ॥ नउपमालगुहाले ॥ ॥ थतेगुरुसयखुकुयाचचाक
राठसमाप्त ॥ ॥ ॥ अतिश्रीकिरणादिक्षायाचचाकराठजुल शुभम् ॥ ॥ ६
ॐ नमःश्रीवज्रवाराहैः ॥ ॥ ताहासिंधुरपूजायाचचाकराठआरंभजुल ॥ ६
थनमुद्रापूजाया ॥ गीत ॥ हाडाभरण ॥ ॥ मुद्रानलिय ॥ गीत ॥ धरथर ॥ ॥ ६

स्त्र्यंति ईं वामकरोटकचतुर्मारसंपदयि ॥ तरुणिमण्डलमारे ओदियाने
गमने ईं रत्नतोपुरवलशतत्रप्रवेशिता ॥ श्रीविद्याथरीदेवीसुरनरसंहिता
ईं सकलऋद्धिसिद्धिदेहिमेमाता ॥ थनसालिंगहणा ॥ गीत ॥ हाडाभ
रणा ॥ थनउपमानकोहाले ॥ वाद्यिलहिय ॥ गीत ॥ चक्किक्कराउल ॥ सं
हारयाय ॥ गीत ॥ जयंजयं ॥ गणावक्कस ॥ गीत ॥ भास्वरखराउ ॥ शेष
वलिविये ॥ गीत ॥ प्रमोदिता ॥ खेमामण्डलथिले ॥ गीत ॥ डंविनी ॥ थनंति
सिन्हमोन्मुखिचचा कराठ समाप्रजुल ॥ ॥ थनंलिंगसमयेखुन्हुया खेन्हु ॥

स्यामार्थवामे॥ ॥ कनकसमभादृशिरोरूपिनीस्वाहं पूजोपात्तचतुर्कुणाप्रति
शिविदिशा॥ ॥ पंचपीयुषपूर्णाग्रदोष्टस्वातदोषा हुं जयेतु भगवन डाकिनी
वाराहीकोष्ठे॥ ॥ गोचवोय पूजा ॥ गीत ॥ राग ॥ मधुमत ॥ ताल ॥ दुर्ज्ज
मान ॥ लक्ष्मी क्षणाहिनसर सूच हुं यस्यदेवी योगिनी गण मराउल॥ ॐ
तमः हुंभी वज्रवीरासिनी हुं चतुर्विंशति पीठे श्वरी गण मराउल ॥ दि
यस्माभार्य्यास्वस्वस्थाने आनन्द मुर्त्ति हुं वज्रमराउल पभावलित दी
अष्टमयगाने जाम्बले मान हुं चन्द्र सूर्य्यदिते रात्रीतातुरे ॥ दान पति स

थतंत्रिजगत्प्रतिष्ठास ॥ नंदितमस्कारथाय ॥ थतरागमाला ॥ गीत ॥ वि
श्वसरोरुह ॥ गीत ॥ हरसिर ॥ मूलवृत्य ॥ गीत ॥ एमहिमराउल ॥ मूल
नृत्य ॥ गीत ॥ त्रिभुवराज्वलि ॥ मूलेवृत्ये ॥ गीत प्रमोदित ॥ भूमिस्थ
तस ॥ गीत ॥ वज्रमयभूमी ॥ वसुंधराधिवास ॥ गीत ॥ गंधमराउल ॥
सुत्रपातनथाय ॥ गीत ॥ राग ॥ नाट ॥ ताल ॥ जरि ॥ पंचसूत्रगुरुतत्व ॐ
विघ्नठत्यतिवज्रविराधिनी ॥ ॐ नमामि २ श्रीकुलदत्तवज्रा ॐ देवीप्र
सादिनमोक्षफलदं ॥ डाकिन्यग्रहेश्वरिराजुभकत्वा ॐ खराउरोहालाम्या ॥

वरुणा मण्डलयक्षां ॥ ॐ राग ॥ भैरवी ॥ ताल ॥ रूप ॥ कुम्भनिभाज
त पंचसानस्वभावे वंकाराक्षरविजमुत्पन्ना रं निवात्व सिंहास्वभाव
मामकिसुर सुन्दरीवज्रयोगिनी ॥ ध्रु ॥ तस्मामिदेवी श्रीवारुणी रसी
नवशतुभिषेजमुत्पन्ना रं आलिढशेषविनेय सनष्ठिनारक खचिलो
चनिदेवी ॥ ॥ अष्टदशभुजधारिककरकवारशरक्ष पदिनिकरे रं पाश
कुशधघरध्वजागडावज्रतवलदंपथमसवे ॥ ॥ अपरऊर्ध्वकरेफेतकधनु
वज्रवंधषडांगकसरने रं त्रिभूलमुकलवज्रवृणोगणापतिदत्तकमोतरे

र्वविघ्नविवारणं ॐ गुरुउपदेशत मोक्षफल दं ॥ रहस्यमण्डल मूलमन्त्र
गीत निर्म्मलादि पंचक्रम पूजास गीत मोक्षदहन खड्गयो
गिनी थापं गीत षट्योगिनी राग मलार ताल माथ राधिया
किरण द्युतिललितासनं ॐ किरणि रत्नरंजित सुशोभा ध्र० नमामिभी
वसुधारा देवी जितजननी ॐ चिन्तित मनसा रनिधारि भद्रकलशवाम
कारधारि ॐ धान्य मंजुलिप्रज्ञापुस्तक धारी निधिदरशत रत्न मंजलि
ॐ गुरुचरणोप्रणामामि धारि लोकेश्वर वज्र पाणि इलादेवी ॐ जभर ॥४८॥

रपुअरभूरयिया कर्णपाचरणाभरतिहो॥ ॥थतंलि॥ गीत॥ कुम्भनिभांज
ल॥ ॥थते॥ गीत॥ अकारसंजात॥ ॥थतंलि॥ गीत॥ राग॥ सारव॥ ता
ल॥ साथ॥ मेरुमराउल परजोभर पवित देवासुर असुरवीर ३ खर्वलम्बो
दरभिषरावयते पिंगलकेशनीलवर्णाभा ॥ध्रु॥ ततो सदादिवाजियारेभा
नन्दनाचयि ३ देववलि महाकालयोगिनीवाधियाते॥ ॥अष्टनागविभुषि
तवयनेकर्तिखट्वांगकपाला ३ हूँहूँकालना दृचर्म्मकियारे रधिरगणाधि मु
राउमाला॥ ॥ व्याघ्रचर्म्मआभरणानागविभुषितचरणा महाकालदेव ३ अ

॥ ॐ ह्रहोः ह्रीँकारेहरितेवर्णां मसृत्माकार भावयते रँ तेनोभव अहिनि सं
कुलवारणो सोपमदो वज्रयव माला ॥ थनराग ॥ ललित ॥ ताल ॥ रूप
महापंचपात्र समयाचारी नुवयि थावे रँ दशदिग दशबल आराधियारे समया
नन्दभरतिहो ॥ ॐ वीरवीरेश्वरवयिथाते मराउलमोहनीविश्वफलिये रँ रहुँ
कारावलिदान देवीरात पतियविघ्नतिवारय ॥ पूर्ववैरोचन रत्नसम्भव अ
मिताभ पश्चिमे वियापिता रँ उत्तर अमोघसिद्धि माऊ अक्षोभ्य समयानन्दभ
रतिहो ॥ सिंहनादवाजियारेडमरु प्रशादे अष्टयोगिनी दानपुन्ये रँ जानेय ॥४९॥

सामिश्रीवज्रविरासिनी ॥ ६ ॥ ॥ थनलि ॥ थन गीत ॥ सुप्तनि मण्डि ॥ ॥ गीत ३
॥ ॐ खवज्रधृक ॥ ॥ गुरुमण्डलसगीत ॥ मध्येमेरु ॥ ॥ सिंधुरथायगीत
॥ गंधमण्डल ॥ ॥ कुमारीआवाहन ॥ गीत ॥ राग ॥ तोडि ॥ ताल ॥ माथ ॥ ६
वाराहीवेष्ठित विदलसरोजा दिनकरमण्डलमध्येस्थिता ँ रक्तथर्म्मोदया ३
चापियाता देवी मकुटकेशादिगम्बरा ॥ ॥ प्रणमामिवाछलि श्रीवज्रयोगि
नी अन्तरबोधिप्रदायती ॥ ॥ द्विभुजएकमुख त्रिणिलोचनारोहितव
र्णाप्रज्वलिता ँ त्रिभुवनाव्यापिनी दक्षिनकर्त्तिधारि मज्जपुरित कपा

तिभयानक्रांतांस्वनाचयि मयतपिवधिउलमंता ॥ धर्म्मचक्रवर्त्ति इन्द्र
भुषितलयिया महाकाल अनुली ईं सवृत्ति परमार्थसिद्धि शोभावि ॥ ४ ॥
रोग ॥ तोडि ॥ ताल ॥ साथ ॥ पूर्वद्वारेडाकिनी श्वेतवर्णी प्रेतारुढा ईं डमरु
खट्वांगसहितकर्त्ति पात्रधरा ॥ ५ ॥ दक्षिणद्वारे प्रेतारुढालामास्यापीतवर्णा
ईं कर्त्तिपात्रडमरुखट्वांगधरा ॥ पश्चिमद्वारे खराउरोहारक्तवर्णा ईं प्रेता
रुढाडमरुखट्वांगपात्रकर्त्ति धारि ॥ उत्तरद्वारे प्रेतारुढारुपिणी श्यामव
र्णा ईं कर्त्तिपात्रखट्वांगडमरुसहिता ॥ पंचरक्तसूत्रवज्रकिरणी ईं व्रण ॥ ५० ॥

जस मुख ॥ ॥ द्वार पूजा गीत ॥ राग ॥ भैरवी ॥ ताल ॥ रूप ॥ पूर्व द्वारासित उ
दयागिरि विविध पुष्प फल वृक्ष संयुता २ सुवरसय रागैर्थ वर्षा शा आ
दित्य किरणाज्वल जल भासा ॥ ॐ ॥ पुष्प दल वावक्त वृक्षादि भमल कोकिल
लादेर मणि २ अचियारे प्रभु दिताविघ्न वारणा थुरथरा श्री सत गुरु आज्ञा
दिगंविदिगं पूजा ॥ ॥ दक्षिणा द्वारे गंधर्व नादत गिरि निवासित देवासुर संग
ता २ विहंगगणा भमरणी नाद विकाशित पुष्प मनोहरा उत्तर वृक्षाव्यत वर
पारा आसाद भूषपद उत्तर दिसी से ॥ ॥ पश्चिम द्वारे सूर्योदय गिरि अश्वे

लधारि॥ ॥ चक्रिकुण्डलकलिठधारि हाथेलोचकविभुषिणी ईं चरणौनौः
पुरदहिनेकर्त्तियमेखला नूरशिरमालविभुषिता॥ विश्वजननी परम
गुरुेश्वरी भवभयतारिणीवीरेश्वरी ईं सहजानन्दस्वरुपिनीदेवी ऋद्धिवर
णप्रसादायनी ॥ ॥ थत षट्योगिनीपूजा॥ गीत॥ षट्योगिनी॥ पंचः
ऊंभपूजा॥ गीत॥ गोकुलदहन॥ अष्टश्मशानपूजा॥ गीत॥ ॐआः हूँफट्
दिगलियाय॥ गीत॥ अतिल॥ कलशपूजा॥ गीत॥ अनुत्तर॥ मात्रः
किपूजा॥ गीत॥ रक्तवर्णा॥ भूप॥ गीत॥ नमः हूँ देवपूजा॥ गीत॥ त्रिभु

नाल ॥ रूप ॥ चन्द्र आदित्यलसंफलशे रं अक्षयविवाक्ष विमदलक्ष ॥ फ्र ॥ नाच
यिश्रीसम्वरनाथेश्वर रं वज्रवाराही गाथे आलिंगणा ॥ ॥ अनुहनन्तरजन्मतरं गी
र रं करुणाभृंगारविराजितरस्य ॥ ॥ चत्वारेन्द्रियनंतरे रं विचित्रविपाक्ष विरक्ष ॥
आलोकेआलोकाभास्व रं आलोकरवंदिप्रभास्वर ॥ ॥ थनरस्य पूजाजाचा
गीत ॥ अष्टनादि ॥ ॥ थत ॥ गीत ॥ चन्द्रोयमशानो ॥ ॥ थनेलि अभ्यंतर
प्रवेश ॥ गीत ॥ क्षविनी ॥ ॥ मुद्रातोय ॥ गीत ॥ स्वदशंहाय ॥ मुद्रापूजा ॥ गी
त ॥ चन्द्रेणमशानो ॥ ॥ कलंकछोय ॥ गीत ॥ धूमांगारि ॥ ॥ थनेमरा

ब्रवृक्षाघनवाणश्चैवैडूर्यरत्नरसपूर्णा देवदानवगणशोषमाना शिबिरविकी
र्णा घनतरशोभिता॥ ॥उत्तरशराशित रविराजोहिमकनकमयसुम्मरुता ३
श्चं गंगातिर्थादिवह्न्यदावायक्षयक्षणी गणविराशितनाभिगंभुत्यथमनोह्
रसिया सर्वचसिङ्गारयत्रमिउदसा॥ ॥ थनसंचपूजा॥ गीत॥ करने॥ स
कलज॥ ॥मूलनृत्य॥ गीत॥ एमहि मरणल॥ ॥ चलिपूजागीत॥ धूमांगारि ३
॥ कुमारीपूजा॥ गीत॥ जयंवाछलि॥ ॥ सालिग्रहण॥ गीत॥ हाडाभरण
॥ ॥उपमालकोहाले॥ ॥ संहार॥ गीत॥ जयंजयं॥ ॥थन॥ राग॥ वसंत ३ ॥५२॥

समहि मण्डल ॥ ॥ थनंजिमातृपूजा ॥ गीत ॥ अकारसंजात ॥ ॥ थनञ्जय
वरदत्तेयाय ॥ गीत ॥ त्रियंविरानाथ ॥ श्लोक ॥ थनंजि ॥ ॥ किरणाताय
॥ गीत ॥ ॐ खवज्र ॥ ॥ मूलवृत्तेगीत ॥ प्रमोदित ॥ गुरुमण्डलस ॥ गीत
मध्येमेरु ॥ ॥ त्रिसमाधि ॥ गीत ॥ अनिल ॥ ॥ मामकीपूजा ॥ गीत ॥ रक्षव
र्ग ॥ ॥ धूप ॥ गीत ॥ नमःहुं ॥ ॥ देवपूजा ॥ गीत ॥ त्रिचक्र ॥ धूपयासेनृ
त्येयाय ॥ गीत ॥ नमःहुं ॥ ॥ चउयोगिनी ॥ नृत्यगीत ॥ सूवस ॥ राग ॥ मल
लि ॥ ताल ॥ साथ ॥ ॥ शून्यनिरंजन परमप्रभु शून्यमायेसंहावे ॐ भाव

रहस्यया च्चाकराठसमाप्तञ्जुल ॥ ५३ ॥ थतलि ऋषिसामतयाच्चाकराठआ
म्भञ्जुल ॥ ॥ ओंनमःश्रीपशुपतेश्वरायः ॥ थतप्रथमं ॥ भूमिस्थतस
गीत ॥ वज्रमयभूमि ॥ अंकपु ॥ वसुंधराधिवासन ॥ गीत ॥ गंधमण्डस
॥ अभ्यंतस्य ॥ भृत्य ॥ थत ॥ गीत ॥ हाडाभरण ॥ मुद्राभूषण ॥ गीत
॥ धत्थर ॥ जमुनिकास ॥ नन्दितमस्कारयाय ॥ थतलि ॥ रागमाला
काय ॥ ॥ थत ॥ गीत ॥ विश्वसरोरुह ॥ जमुनिका-कोत्तय ॥ गीत ॥
हरशिर ॥ मूलनृत्य ॥ गीत ॥ त्रिभुवनाम्बलित ॥ मूलनृत्य ॥ गीत ॥ ५३ ॥

चिन्तचक्रोद्धारस्तुतिं नृत्यते ॥ गीत ॥ राग ॥ ललित ॥ ताल ॥ माथ ॥ चिन्त
चक्रोद्धरि हुंबिज संजातारे ॥ नीलवज्र वेथित पुलित पीत हरे खराऽक्त पानी
सित रक्त चरणा चा सपुरु नीलवर्ण चउहं अति शोभिता ॥ ॐ नमिनाथ
तुलजित भुवनेश्वर दशदिगस्थित भवतारकरणां ॥ श्लोक ॥ वाग्वि
काय ॥ वाग्वकारेआः कारोऽवारणा कामरूपिठ शोभाव अकुर्य्यादि
वीरे २ ऐरावत्यादिशायोगे रक्तासव्यदृव्यहृवज्रयेऽठवा गडमरू
धारिता ॥ श्लोक ॥ कायचक्रोद्धृत्ये ॥ कायचक्रोद्धरे ॐ भव

हविय संहवदा· ताना सि मयि जांवु॥ श्लोक॥ उत्तरे ॥ तठ भवन उतिर्वाणा
तहि· एकु सो महसुहवर्ज्ज हं योभावयि मत भावयी· सो परसाहयिकर्ज्ज ॥ ३
श्लोक॥ पश्चिमे॥ अक्षेरु संचलिवर्य्ययो· नोसोविन्दुतचित्त हं एकु सो परम ३
महसुह· तोभेदिनचित्त॥ श्लोक॥ दक्षिणा॥ जिमपरिविन्दु संहावदा· ति
मि भावयि मत भावयि हं भूत्मति रंजन परम प्रभु· तोतयि पुत्मतयाठ॥ ॥
श्लो॥ ॥ सर्वचठ योगिनी वृत्ते ॥ जिमजल माकेखन्त्र सहि· तोसोखछ नामि
छयि हं तिमि सो मराउस चक्कडा· तनय संहावे स्व छ॥ श्लोक॥ ॥ तठहि ॥५४॥

॥ ॥ पद्म गाधिपति रक्तार सर्वर्णा ॐ श्वातानन भिसनाग भयहरणां ॥ श्लो
क॥ ॥ यंसति धोरं गौरवर्णाभा ॐ कोलास्यायिवय सभयहरणां ॥ श्लोक॥ ॥
धनंजयपति नीलपीताभा ॐ वन्हि भयहरणा महाक्रोधवदनं॥ श्लोक॥ ॥
यादुधातेश्वर राक्षस भयहरणां ॐ पीतारुणावर्णा लोलवदना॥ श्लोक॥ ॥
मारुताधिपति लोहित श्यामा ॐ वाडालि नाशन उंष्टवदना॥ श्लोक॥ ॥ धुना
धिपतिर्निधुनकरणां ॐ क्रोधवदनं हरित नीलाभा॥ श्लोक॥ ॥ द्वादशवीर म
हा क्रोधवदन डाकिन्यादिदेवी आलि ऋगणा ॐ श्री चक्र संवर प्रशादि गाव

भुक्तवज्रबंधपीठेतपूरिमहावलादिवीरं चक्रवेगायालिंगितभुक्तो
भुचउभुगाजतार्द्धेंदुभुक्तहारायजलंकृता ॥ श्लोक ॥ चतुर्विंश
तिवीरेश्वरप्रचरतायालिंगितविश्वरणाकंपितत्रियानसंस्थिता ॐ खविस
वीरदेवी एकभूत्येस्वभावागमने भवतियीकुलिशनीलप्रशादात्
श्लोक ॥ ॥ थतलितवह्निरेकाकाशणादित्येतेगीत ॥ राग ॥ कामोड ॥
ताल ॥ खडुकंताल ॥ पूर्वदिप्रति अतिनीलवर्णा ॐ प्रत्यंगराचानीकाकव
दना ॥ श्लोक ॥ उत्तराधिपतिहरितवर्णा ॐ उरुणाभिमयक्षभयहरणा ॥ ५५ ॥

ईं गुरुपादशिरे धार्य्यवेगफलाप्तां ॥ ॐ नदत्त छवि शंगरी वन्द्र नार्थ नृत्ये
गीता॥ राग॥ भैरवी॥ ताल॥ त्रिभूरा॥ नमामि २ श्री इरुक वीरचन्द्र शेषरा
वीरा विश्वकुलिशाजरा २ पंचकपालालंकृत शोभितत्रिशीलनेत्रा॥ ॥
॥भक्तिनता हूँ हूँ तेता हूँ हूँ सयरवियापिता करुणामय सत्वउद्धार सम्वरा॥ ॥
नमामि २ गजचर्म्मविभूषित व्याघ्रचर्म्मषड्भुजा २ गांडारिगणा अव्ययसमा
धिवज्रधराऽऽलिढपदा॥ ॥ नमामि २ आलिकालीप्रचापित द्वादशभव
नेश्वरा ईं डमरुकर्त्ति कर्त्तिकुठार त्रिशूलाखट्वांगकपालपाशखड्गशिरा॥

त्रिश्रीकुलिशा ॥ श्लोक ॥ ॥ थनशूलनृत्ये ॥ गीत ॥ विहंडा ॥ ॥ थनबोला
विलि ॥ प्रलोपाय नृत्येयाय ॥ गीत ॥ कवडे ॥ सकरग ॥ ॥ थनसंपूजायाय
॥ गीत हुँविज सम्भव ॥ राग ॥ वसंत ॥ ताल ॥ साथ ॥ भास्कर विन्दुमण्डलेमाझि
सुसंस्थिता हँ पंचडाकडाकिनीसुसंवृता ॥ ॐ नौमिश्री विद्याधिनी पादचर
णायुगा हँ वीरंवीरेश्वरी गणाहंदा आलिंगणा ॥ ॥ दंडास्यविनेत्रंवज्रायश्रुक
सुद्रा हँ मौरी कुण्डलकण्ठि मेखलानौखुरा ॥ ॥ पतिघण्ठानागचर्म्मडमरुखड्ग
गा हँ पाचपरशुपाशनिभूलशुण्डमाला ॥ ॥ पञ्चडाकिनीगणाधिपहेरुकनाथं ॥५६॥

आलिंगणा आनन्दनयते॥ ॥चापयि सम्भोग सयरथी मयते हं रागविरागद्व
यिसाक्षेनिषर्णा॥ ॥अक्षकुलिश संभोग विमुखना हं सुरतसुखंदाआलिंग
णा॥ ॥दहदिहभुवनेश्वी योगांबरा हं प्रणामामिगणनेश्वरी आलिंगणा॥ श्लोक
॥॥ राग॥रामकरि॥ ताल॥ साथ॥ हूंहूंहूं देह धरु संसारतरु हं ह्रंरा आलिं
गणायोगधरु॥ ध्रु॥ हेवज्रतुलतेना हूं हूं तेनाहूं तेनातेतेहूंहूंहूं॥ सुर
नरवंदितचरणा धरु हं कुसुमविलेपनदेहधरु॥ ॥भावविमुक्तविशेषगुणा
क्षयायि हं नमःहूं नमःहूं श्रीहेवज्रतुलगुणाप्रेमयि ॥श्लोक॥ ॥ राग॥ नाट॥

नमामि२ चतुर्विंशति पीठेश्वरीरापितत्रिणिलोचनाइं रुद्रिशंवीरवीरेश्व
रनाथनमस्तु२ पन्नवृत्तेश्वरा॥ श्लोक॥ थनवाहिनयिये॥ गीत॥ च२
क्किरावल॥॥ सहभोजनस॥ गीत॥ वासाहहिना॥॥ थनमूलवृत्ते॥ गी२
ना कोलाई॥ श्लोक॥॥ मूलाम्बार्य्यवृत्तेकास्वं शालिग्रहणा॥ गीत॥ खडा२
भरणा॥ श्लोक॥॥ थनडाकिन्यादिवृत्ते॥ गीत॥ जयंवाकुलि॥ श्लोक॥॥
थनगीत॥ वसंत॥ ताल॥ रूप॥ जितवज्रजनी प्रभास्वरेमणिइं विराश
यिसमरसंक्रेदा आलिंगणा॥ रू॥ निरंसुरसुरेयभृंगारसंपूर्णाइं गांठा ॥५७॥

रागसोच्चतपवित्र॥ ॥ रागद्वेषरागमोहरागईर्ष्या ईं नच्चपैभूत्वे समाननदर्प॥
॥॥ भावनभावकमित्रणाशक ईं निस्तरंगसहजश्चविशुद्धि॥ ॥ येननुयेननु
वञ्चतिलोका ईं तेननुतेननुवञ्चनमुच्य॥ ॥ लोकोमुज्येतिवेत्तिनतत्त्व ईं न
त्वविर्जितसिद्धिनलप्स्य॥ ॥ तस्मात्रगेयनशब्दनरूपो ईं नैचरस्पनचत्ति
नविशुद्धि॥ ॥ स्पसत्व धर्म्मतसयरविशुद्धि ईं शुद्धस्वभावनजगोजगुज्यसे
श्लोक॥ ॥ तदनुकायवक्तापूर्वलिष्टस्य॥ ॥ राग॥ मयुमत॥ ताल॥ द्रुतमा
त्र॥ सास्मिरएहुतभुजकमल भेरयि चक्रसोवर्णावरजलजयत ईं प्रस्फुलि

ताल ॥ जटि ॥ सकलजगतगुरुसत्यवीरा हं अद्भुपमकरुणाकर्तिसुखचिन्ता ह
॥ ध्रु ॥ सम्बर २ क्रुरुमयितोषं हं विविधिकल्पविनाशनरूपं ॥ देवीवातहीः ह
तुलुमण्डितदेहा हं भवभयहरणविशारविशेषो सकलविघ्नहरंति मति
पतिरुंगो हं पतिस्वर्गतिवासनरुता ॥ भावाभवकृतहृतिमतिचिन्तो हं
अद्भुपमसुखरसमयसुखचिन्ता ॥ श्लोक ॥ नद्बहिरचित्तचक्रपूर्वालोक
स्य ॥ ॥ राग ॥ विभास ॥ ताल ॥ रूप ॥ परमरतोत्तर वभावतभावक हं नव ह
वियहन वयाहरणमहेक्ष ॥ मासनशोनितमुत्ररविष्टा हं नवघुणामोह ह ॥५८॥

गीत ॥ अनसिक्त ॥ श्लोक ॥ ॥ गीत ॥ ज्वलितवज्रातर ॥ श्लोक ॥ ॥ गीत ॥ निर्ज
भुव ॥ श्लोक ॥ ॥ गीत ॥ गजजित ॥ श्लोक ॥ ॥ गीत ॥ वज्रयोगिनी ॥ श्लोक ॥
गीत ॥ विविहंवि ॥ श्लोक ॥ ॥ गीत ॥ उदिता ॥ श्लोक ॥ ॥ गीत ॥ राग ॥ गो
दयी ॥ ताल ॥ साथ ॥ वामवत्तरधर दहिनकर्त्ति रँ पाथर नौपुर मुण्ड ध
मालविभुषिता ॥ भ्रु ॥ देवीनाचयि एकजरी भी वज्रयोगिनी रँ त्रिणिनेत्र
देवी त्रिभुवणापरि से ॥ ॥ कालमृत्युह्रियि पाशेन वंधिरे रँ रागह्रि मो
हकर्त्तिन छेदिता ॥ ॥ स्थूलसुक्ष्मदेवी त्रिभुवनदेवी रँ शून्ये पात्रदेवी भ्रु

यदिनमानिसायर गोरिमंत्रकठिनयुगआलिंपदं॥ ॐ हूँहूँहूँआः ओंऊं
हूँहूँहूँ॥ मुखडमालचर्माघ्रच र्मभूषितषट्मुद्राहाराकारवस्त्रशोकरं ईंद
हयियप्रसारिरे मारविदारमंत्रवक्त्रभीषणलीयठमुखं॥ विश्ववज्रपं
कैशिरेनारशंखशोषरसोहियनादखलं ईंज्वलितकुलिशघराठमुद्धत
रःद्विभुजेहेरुकआलिंगनलिचियं॥ समरसुमहवोचियनादयिना
दकरंगेतमरभुवं ईं अवधुवप्रयिसयिसहजश्रीसंवरः अनिलतरंगणा
लिनगति॥ श्लोक॥ तद्दिकाकाश्मादिनडंवीसस्य॥ थन लनिं लनिं ६ ॥५९॥

हूंकुंजरणा ज्योतिरुप आतन्द्र मूर्त्ति उन्मेशरीरा ईं जरामरणभवदुःखविनाशन
प्रणामामि हूंहूंकारा॥ ॥ सजलधनुसय फरफल्लेए हूंत्रिभुवणाकपिय पंच
ज्ञानचय कायचक्रवर्त्ति ईं चन्द्रमउजयविघ्नविनाशन प्रणामामि हूंहूंकारा॥ ॥ रुं
नरणारशिर मालबविन धरधरते रुधिरारुणारविशशि मरण्डला ईं श्रीमतवज्र
सत्व परमेश्वर प्रणामामि हूंहूंकारा ॥ श्लोक॥ ॥ ततोवलिदापयेत्॥ ॥ राग॥ वसा
दि ॥ ताल॥ साथ ॥ सर्वायारे काल विकाल सुकलियाउरे त्रिणीकाले ईं सर्वनि
पते पूजिकजि सजल चंगरे माया॥ ॥ हूंतेंगुंनुवज्रकवाले मयिपरि तोहियेव

त्यस्वभावो॥ ॥भृष्टिसंहारलायाकरुणादेवी रं मोक्षमार्गदेवीचिभुवनजन
ती ॥श्लोका॥ ईं॥ ॥तत्रशिरांविप्रचारणां॥ ॥थनगीत॥ सर्वबुद्ध॥ ॥
तस्तुअचलनृत्ये॥ गीत॥ अवनितिहितजानु॥ श्लोक॥ देवदिगंवर
नृत्ये॥ गीत॥ राग॥ भैरवी॥ ताल॥ त्रिपुरा॥ देवदिगंवरधवरकर्त्रिगज
चर्मविभुषितनाचयिसमभुजनयनधरंते रं भैरवकालिरात्रितलचा
पयि प्रणामामिहुंहुंकारा॥ भ्रु॥ उथभराडोसवरकरुणामयदेहा रं जन्मज
न्मतुंजपायशरणागति॥ ॥प्रलयानलजरामरणाभयशिवज्वलज्वलनेस ॥६०॥

नी ॥ श्लोक ॥ ॥सर्वे शूद्रां वर्जयेत् ॥ गीत ॥ सोदशंहाय ॥ ॥ थेतेखचिसा
मतयाचवाकराठसमाप्रजुल ॥ ॥ तनसालियहरा ॥ ॥ चित्तचक्र ॥ गीत ॥
अखयतिरंजत ॥ श्लोक पूर्व ॥ ॥ गीत ॥ विरलपद्म ॥ श्लोक ॥ ॥ राग ॥ कर्णादि
॥ ताल ॥ रूप ॥ नीलगयनेशोभितअंगे रं चिमुखविलोचनीकमलसभवे ॥
क्ष ॥ भावरेश्रीयोगांवरीरा रं योगिनीस्तनेश्वरीकरुणानचयि ॥ ॥डाकिनी म
राजलचक्रफलिया रं मराजलकोतेविदिगतसंस्थिता ॥ ॥ वर्जियोरिवेटालीचरा
ली रं सिंहिनीव्याघ्रिणीजंबुकउलोकिनी ॥ ॥डाकिनीविपीनीचउसिकंभो

लियोरे ईं पंचामृत रसकुलि राउलोल गोकुरहुत पंच सालेा॥ ॥ ओंआः हूंफट्क
लिपेवुरे त्रिये समयरविशशियोरे ईं चरणाफरणा सहोरे अक्षयमहाकुरु भुते
॥ ॥ इन्द्रयमय क्षारे भुतवन्हिवरुणवराक्षारे ईं चन्द्रसूर्य्यद्वयिकधारे तालपा
ताल अस्त्रागा॥ ॥ इदंबलिजिघ्रारे फल धूपमासमोदियोरे ईं क्षांतिभक्षकूर्क
धारे दानपतिरे सर्व कार्य्ये साधारि॥ ॥ करणावलि अधिष्ठानेचालि मारभये ई
भंगारि ईं राजादानपति सपरिवारल सत्व आयुरारोग्य ॥ ॥ कलंक क्षेय ॥ गी
त ॥ धूमोरि॥ ॥ मूल छवि शांतल्वाते॥ ॥ अभ्यन्तर प्रवेशयेत् ॥ गीत ॥ छवि २ ॥६१॥

रिठशोभा रँ हस्तककेयुरखड्गसुच॥ ॥ मेखलतौपुरपायल रँ व्याघ्रभस्मव्या
घ्रचर्म्म॥ ॥ जयामकुटविश्वव्य रँ शुक्लमुखअर्द्धचन्द्रचक्रं॥ ॥ सव्यकरवज्रव
सिंघराउ रँ भैरवकाली आलिङ्गपद॥ ॥ हेंदोल घं जयश्री द्विभुजसम्व रं त्रि
भुवनव्यापिता रँ ऋद्धिसिद्धि महामुद्रासिद्धि ॥ श्लोक॥ ॥ थनगीत सवाकोता
॥श्लोक॥ ॥ राग॥ करादि॥ ताल॥ रूपं ॥ नीलहूँकार प्रज्वलितकिरणा रँ ऊर्द्ध
पिंगलकेशश्रीहेवज्रलाया ॥ ॐ॥ नीलवर्णदेवीकर्त्तिकपालधरा रँ जगतमोक्ष
करिश्रीनैरात्मादेवी॥ ॥ कोधावीरडिम्भिआलिंगणा समाधि रँ षोडशभुजकरो

जती ईं जन्म जन्म भयदुःखविनासती ॥ श्लोक ॥ ॥ राग ॥ शृंगारसारङ्गि ॥ ताल
माथ ॥ षोडशभुजचतुर्मुखत्रिनेत्रे ईं नीलवर्णाचतुपादपिंगलकेशा ॥ ॐ ॥ ते
नाहुँहुँ तेनाहुँहुँ तेनातेतेहुँहुँहुँ ॥ दक्षिनेखट्वरवामेपात्र आलिङ्गपद्मं ईं ६
हरिहरब्रह्मइन्द्रचतुर्मारमर्दं ॥ कृष्णवर्णाद्विभुजत्रिनिलोचना ईं दक्षिनक ६
र्त्रिवामखड्गपात्र ॥ नमः हुँश्रीहेवज्रनैरात्मादेवी ईं सतगुरुचरणोजिन
सिद्धिगीता ॥ श्लोक ॥ ॥ राग ॥ नरावरि ॥ ताल ॥ माथ ॥ हुँकारजातभुक्कदे
हा ईं द्विभुजएकास्यत्रिनेत्रं ॥ ॐ ॥ तेनाहुँहुँ तेनाहुँहुँ ॥ चक्किकराउल क

श्लोक॥ ३॥ वाक्‌चक्र॥ गीत॥ परमतोर॥ श्लोक॥ ॥ राग॥ गुंजलि॥ ताल
साथ॥ करकरोटक षोडशभुजा हं सापक्षिजैसा ँ षट्‌मुद्राआभरणाथरि
यकरसा॥ ध्रु॥ थिरेनाचयि २ श्रीहेरुवलाया ँ मेरुमण्डलवसहुपद्मार
॥ ब्रह्माचापिरेचतुरमुखहरिहरइन्द्रा ँ सहजयोगिनीलेया हिंगवयिचन्द्र
माहे॥ ब्रह्मायनीइन्द्रायनीराक्षिगौरिउपवाहे ँ स्वामिहमारेचापयिथरेश्रीहे
रुवज्रलाया॥ श्लोक॥ ॥ राग॥ वसंत॥ ताल॥ रूप॥ क्षमाबरानिलुशारदाश्र
यीवे ँ चउमुखचरणाभैरवकाली॥ ध्रु॥ नाचयिरेश्रीसम्वरलाया ँ श्रीवज्र

रक्तधारिया॥ ॥ भस्मविभूषितषड्मुद्राभरणां ॐ व्याघ्रचर्म्मपरिधिरनरशिर
माला॥ ॥ डलामहेश्वरनारायणाछुद्रं ॐ चापयिचउचरणोचतुर्मारमर्दन श्री
क॥ ॥ राग॥ विभास॥ ताल॥ रूप॥ कटिएकरुतदेवीरुडमालछंदे ॐ
सहजआनंदवाछलिदेवी॥ भ्रू॥ नाचयिएकालीत्रिभुवनाछलस्म एकाली
ॐ सयारविडलसतलएकाली॥ ॥तुलवाछलीदेवीनानारुपे ॐ एकपाद
तोरिगयतेरयिया॥ ॥तुलवाछलिदेवीजगतउतरनि ॐ तोहुभनारश्रीहेरु
वलायिया॥ ॥ पालिभैरवउभयसचरणे ॐ एषचराचरवज्रयोगिनी नाचयि ३ ॥६३॥

मन्त्रबोले ॐ भगवन्नमो वज्रहेरुकोले ॥ श्लोक ॥ ॥ राग ॥ मल्लाल
॥ ताल ॥ रूप ॥ विश्वकमलोपरि सव्यकपाल सूर्य्यस्था ॐ हूँकार संजात
कृष्णवर्णदेहा ॥ भ्रू ॥ नमामि श्रीहेरुकवज्रविभुवेशनाथा ॐ ऊर्द्ध पिंग
लकेशा मौलि विश्वकुलिशा ॥ ॥ त्रयमुखषड्भुज प्रतिवक्त्रत्रिनेत्रा ॐ मूल
कृष्णसितरक्तसमयतनो ॥ ॥ प्रथमभुजद्वय शृंखलालिंगणा ॐ वज्र
घण्टाकर्त्रिखट्वांगधरा ॥ ॥ खण्डमुण्डाभूषणानरशिरमाला ॐ सकल
वृद्धिसिद्धिमोक्षप्रदादा ॥ श्लोक ॥ ॥ राग ॥ रामकरि ॥ ताल ॥ ज ॐ

वाराहीआलि झ्रा शोणितनाचयिरे ॥ डाकिनीलामारव राउरोहा रँ रुधिरासि पंच
जसिद्धिप्रदायकं ॥ कायवाक्चित्तवशिरे रँ कोरेकाकमुखचउघारे ॥ किंडंति
मराउलछत्रिसंवीरेश्वर रँ प्रणामामिअद्वयसिद्धि प्रदायनी ॥ श्लोक ॥ ६ ॥
राग ॥ मारव ॥ ताल ॥ रूप ॥ गौरिचौरिवेतालि धरमरि पुष्कसी रँ सवलिचराउ
ली दोम्बी मराउलप्रवेशा ॥ झ्रा आनन्दनाचयिहेरुत्र वरायिया रँ तैरात्मारानी
कालेरायिया ॥ चरणाधारेवे पंचमुद्रराणा रँ विभुतरुमुराउमालादिगंवरा ॥
पंचामियरस गोकुदहने रँ दलइवे भुजतर्पे मृतमयना विमलसत्वकुरु ॥ ६८ ॥

ना ॥ ॐ ॥ योगिनीज्ञानाकरसरुवेज्ञयालिंगणा ई रुवका ई कुलिशाधराठ
गजचर्मडमरुवे थरियावपरसुकर्त्रिपाशा ॥ वामखट्वांगकपालचिभूल
थरियारेवलकपाला ई आलिकालिडईचापियागाठानाथवरसंप ई
शारिरे ॥ ॥ विश्वकुलिशाअर्कचन्द्रएतिभृषियापंचकपाला ई वाराही आलि
गणाशोभाच्यंवकभीषमवदनतयते ॥ ॥ चक्रिकुण्डलमुद्राशिरमाला छ
त्रिसंवीरगणायका ई महज्ञानंई फलियारे मण्डलप्रणामामिश्रीहेरुवलाया
श्लोक ॥ ॐ ॥ ॥ तदनुकायचक्रा ॥ ॥ राग ॥ गोडयी ॥ ताल ॥ रूप ॥ चक्रिचक्रि

रि ॥ ऊर्ध्वरक्तनेत्र पिंगलकेशा रं नाचयि हेरुकउन मरुवभेषा ॥ ऊ ॥ ह
हेरुव २ दे मोरुकोला रं वधीचरणालीलिया शुभ्रुरणाभीरा ॥ वामहं ह
वी दहिनेचरणाली रं मारुहि विसणि हेरुववासी ॥ ॥ दहिनडमरुवा
मे खवांग रं अष्टयोगिनी मेरि हेरुव संगे ॥ ॥ गावंतिकरणिया हेरुवरा
स रं कायवाक्चित्त हेरुव नीलस्य ॥ श्लोक ॥ ॥ गीत ॥ अष्टनादि ॥ ह
राग ॥ तोडि ॥ ताल ॥ साथ ॥ दिनकरमण्डल मंदिरे वारविशशिवन्हि
द्वादशनयना रं नीलश्याम लोहित पिताभाकोध समाधिविकट नय ह ॥ ६५ ॥

गणाशिरवलमाऊरागगता॥ ॥दहिनकर्त्तिरसपात्रधारी ॐ वामखड्ग
ध्वधारी॥ ॥सर्वकीलमुखिमारसंचाशिता ॐ नरशिरमालविरता॥ ॥गा
वंतिसुतवज्रदुर्गतिभिता ॐ जन्मजन्मतंजुपायिसेविता॥ श्लोक॥ ॥राग
॥भैरवी॥ तान॥ रूप॥ जितजिकरत्नाधृक्आलोलिकप्रत्नाधृक ॐ रागर
तिश्चिरतिरे मोदरवज्ररतिरे॥ फ॥ हूँतमःहूँ २ प्रभुश्रीवसमाजावज्र अव
यसक्तराजा ॐ सुरतवज्रदेवीसंतजो ड्आजानमि सहजकराजा॥ रूपशब्दे
गंधरसवज्रारतिसायसुवज्रा ॐ आजितक्षितिगर्भ कुलिशकराजा गगणगर्भ

सम्पेमे
कु घं

मोहिरे दहिनीचण्डाली रं इठं काले अमोघसिद्धि रक्त संभवे ॥ ॐ जय
या हेरुवज्रवाराही रं खट्टङ्ग खादिरे नीलवर्णाभावे ॥ ॥ हेठंकारे आगच्छ
न्ति हेरुवसहजस्वभावे रं सर्वसत्व उद्धारिरे शिरेचक्रि मुण्ड ॥ ॥ पंच तथा
गत करोठधारि शुद्धि रं प्रज्ञयापउद्धारि रडमरुवज्रांगे ॥ ॥ मोरुभी हेरुवरु
ण्डमुण्डकेरागे रं भनन्ति गो सामिनी अभानभावे ॥ श्लोक ॥ थन ॥ गी
त ॥ त्रिखंडा ॥ श्लोक ॥ रागविभास ॥ ताल ॥ माथ ॥ नाभिमण्डल माझे
उत्तभविता रं सुसुम्ना सहजसमाधिता ॥ ॐ देवीश्रीमाशितउद्भगला रंग ॥ ६६ ॥

ली. प्र. ल. ९९

गजचर्म्मभूषिता रं चरणनीपूर रूर्द्दरा विभूषित मुराउमालादि गम्बरं देहा ॥ ॥ २
भृष्टि संहार नाथा आनन्द नाचेयि · अद्वय समाधि व्यापिता रं खराउ मुद्रा गांधा २
रिगराम राउल परमानन्द मूर्त्ति ॥ ॥ गावंति रत्नवज्रभ नायिणीना गुरुचरणा शि
रेमत धरिया रं षट्गति भयदुर्गति नाशन · अष्टऋद्धि सिद्धिवर प्रशाद ॥ श्लो
क ॥ राग ॥ कर्णादि ॥ ताल ॥ रूप ॥ विश्वसरोरुह दिने सम्मराउल रं हूंकार
संभव कुम्भवर्णदेहा ॥ ध्रु ॥ नमहूं रश्री हेरुवलाया रं वज्रयोगिनी पालिगन
नाचयि त्रिमुखषट्भुजश्रुक्कारुणाविनेत्रा रं विश्वकुलिशा क्रुद्धजटा २

वरानना ॥ ॥ कमलकुलाकुलवलयधवलाभिरलंभिनसमंतभद्रा ईं समयारि
पुप्रशांतकाअपराजितसमंतभद्रा ॥ विघ्नानकृतांचरटर्किराजनीलदराउ
महाबल ईं उल्लिषचक्रसुभ्रराजारे शोभितविवसराउला ॥ श्लोक ॥ रागः
॥ पंचम ॥ ताल ॥ माथ ॥ हूंकारसंजात सहजानंदरूपयरावसुलोकपालः
चैत्येसंस्तुता ईं कायवाकचित्तसद्यसराउलविविध पूजिता ॥ ॐ प्रणामामिभी
विभुजसम्वरवज्रवाराही भूत्यताकरुणामय ईं अभ्यंतेरज्वालावलि चतुर्थरि
चतुर्रसंकूटागारं मनोहरा ॥ दहितकरवज्रवामघराळाजटामकुटअर्द्धचन्द्र ॥ ६७ ॥

रक्तवर्णाभासव्यघनककर्त्रिदधानं दं इतरेतुपात्रंखड्गांगवानप्रतिचिह्नारे
स्थितप्रत्यालिढचरणां ॥ भृकुटानतघोरांगापीतवर्णाभासव्यडमरुकर्त्रि
दधानं दं वामपात्रखड्गांगदक्षुप्राचिरेस्थितप्रत्यालिढपदं ॥ त्रिभुवनाना
थसुरनरवंद्यावेदवर्णात्रिनेत्रसुशोभा दं द्वादशभुजाषट्मुखांगाचक्रम
ध्येस्याआलिढचरणा ॥ ॥ राग ॥ शृंगारमारभि ॥ ताल ॥ माथ ॥ त्रिभुज
एकमुखत्रिनेत्रनीलवर्णा रविशशिमणमाहे दं विश्ववज्र अर्द्धचन्द्रजटा
कटध्वजा हाडआभरणसुशोभिता ॥ ॥ तेना हूं हूं तेनाहूं हूं तेनातेते हूं हूं हूं

मक्रुट ॥ प्रथमभुजवयकुलिशघराढं द्वितीयभुजदक्षिचर्म्मतरिया ॥ ३
त्रयभुजउमरुखट्वांगकपाल ढं षट्मुखाप्रमुण्डमालाविभुषिता ॥ आलिकाली
दुयिआलिङ्गापयि ढं प्रणामाभिषेकसिञ्चि प्रदाता ॥ श्लोक ॥ थतगीत
चञ्चारित ॥ श्लोक ॥ राग ॥ कामोड ॥ ताल ॥ खट्कंकार ॥ काकाननभिमागः
नीलवर्णाभा सव्यडमरुकर्त्तिदयानं ढं इतरेतुपाचखट्वांग पंचप्राच्यकोरस्थित
प्रत्यालिङ्गचरणां ॥ उलूकास्यघोराकं श्यामवर्णाभा दक्षिणाघनकंकर्त्तिदयानं
ढं वामेपाचखट्वांगशरुदिचि कोरस्थितप्रत्यालिङ्गपदं ॥ श्वानानानभिमां ॥ ६

नानाक्रमावज्रखड्गभिंडिपालदहिनकरां ई मुसलधनुःखड्गांगखपरकर्त्री
वामे॥ ॥ विचित्रवल्कलकटिवेशाजटायुतमणिमण्डिता ई लंबोदरतरः
स्थितलम्बोदरशोभा पायेरझिलिझिलिवाद्यते॥ ॥ रत्नान्तरधृतरत्नस्खलिता
मुखिकमुखअतिसुंदरा ई दीनारत्नातमुखदाता नमस्तुतमस्तुगणाधि
पति॥ ॥ रागतोडि॥ ताल॥ खट्कंकार॥ पंचकपाल धारितमौलि पं ३
चज्ञानपंचमुद्राभरणा ई नरशिरमाला ग्रीवे शोभाव्याघ्रचर्मकटिभूषितलः
मणा॥ ॥ हूं हूं हूंकार संजातवरदा खर्वलम्बोदर तीक्ष्णदंष्ट्रा कोथारि ः

वज्रवाराहीआलि ॐ रा सम्वराभुजद्वयेन वज्रघराठाधरा ॐ काली भैरवप्रा
भरणा दिगंविदिगंकाकास्यादियमडाकिनीदेवी ॥ ॥ श्री वज्रदेवीचरणाभ्र
शादेनसतगुरुचरणाशिरिगत धरियाॐ गावतिश्री रत्नवज्रकुलिशाजन्म
जन्मश्रीसम्वरसरणा ॥ ॐ ॥ राग ॥ धनाश्रि ॥ ताल ॥ चत्यति ॥ गजमुख
त्रिनयन मांडवपर्वतवृत्तादिपतिगणेश्वरा ॐ मणिमुक्तारत्नाभरणा नरु
णीकिरणा सकाशा ॥ ॐ ॥ मारियाविघ्न मारिया दर्प मारियादुःखविनाशनंॐ
मारिया मारियामाला मालसंचासामेरुवं पभद्रःखविनाशिता ॥ ॥ पर्भू

THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO.

MBB—1971— 161-89, 90,

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

र थारि ॥ ध्रु ॥ तमसि मंजुस्मि यमनृत्यभरा ईं सयेर आसापरि प्रवि प्रविनट
धारिता ॥ ॥ दहिने श्री गणपति वामे श्री महाकाल ईं सगणा मण्डलमा
हि प्रज्वलित छिता ॥ ॥ शृष्टि संहारला यावि श्व व्यापिता ईं अरु भयवहु
याधिदुरितहरणा ॥ ॥ वज्र धरप्रशादि रासभतयिया ईं गुरुचरणामोरुसि
श्रि वरप्रशादा ॥ ॥ राग ॥ रामकरि ॥ ताल ॥ जरि ॥ जितवरतनय निभुव
णाश्री कांपोतर निवासयति मंगल मतिता ईं तेपाल मण्डलमा हे शशिहन
कीरणो जगत मण्डलमा हे मणिना ॥ ध्रु ॥ त्रियोगति गंधियारे अवतारे

॥७०॥ प्रतिथी महाकाला रे पंचासुत दर्प भवनीना भोगवनङ्ग कपाल धरा ॥६
रक्तवर्त्तुल त्रिणि नयना घोरभयंकर भिषमवदना रे ऊर्द्ध ज्वलिता पिंगल
केशाडम्बर भेशाकरुणामय ॥ कर्त्रिकपाल धारि खट्वांगालागवरधना
गाङ्गराङ्गहाला रे नागशिरसिङ्गा मौपुरनागा अष्टनाग आभरणा सु
शोभा ॥ ॥ जिनवरमौलि थालिनमेखङ्ग सासनसारश्रकवीरा रे प्रेतारु
ढा तांडवभावासाध्वनङ्कलिशा अद्भुतरशरणा ॥ ॥ राग ॥ मलार ॥
ताल ॥ रूपक ॥ एकवदनत्रिनेत्रमकुट आलंकृताः रे चतुर्भुजरक्तरूपलक्षस ॥७०॥

मधुरिपुविपुराद्वयितिकुलालाद्यं सकलदेवतावंदितचरणे ॥ ॐ ॥ मैत्रि ३
आदिब्रह्म - श्री मंजुकमारा द्यं खंडाविवंधुरि प्रभनृपेश्वरा ॥ ॥ कुंकुमरुवि
रासुरवीरविषमाद्यं भूत्वागमिरकरुणाविहारा ॥ ॥ विषमविषमकुरुप
रागमनस्य द्यं विश्वविख्यापिताशिवगुरुश्वयंभु ॥ ॥ सद्गुरुचरणविन्दभ
राधे द्यं गावंतितवगीपवनकुलिशा ॥ ॐ ॥ ॥ सम ॥ वल्यादि ॥ ताल ॥ साथ ॥ ३
रातशस्त्रेतोलामराउल रीलोकोरि हाथेतोलादेहा द्यं दशकोरि हाथेतो ३
रायोगिनी वृन्द योरवासुचित्तकरदेहा ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ कालमराउलतो ३

यादेव प्रणामामि वुगमललोकेश्वरदेव रंसिंघा योगिवंधु दत्तपरिक
मयाशुवंपतिचूडामणिनरेन्द्रदेवं ॥ ॥ रविकमलविंवप्रकाशितवोधिया
रेषामकमूलथरहोथे रैनुलसुमरतेरोगकुष्ठकदारिद्रदुःखहरणा ॥६
॥ ॥ हूंहूंहूं भगवतीकायाभगवतीनमामि श्रीवुगमलोकेश्वरदेवं रंन
मामि २ श्रीनरेन्द्रदेवं स्वर्गमर्त्यपातलदेवं ॥ ॥ दशभूमिवाविंशतर ६
क्षणाधरिया जगतनाथ अभयदाता रं श्रीअभिनाभवशिरेगत धरिया
श्रीलोकेश्वरशरणागामिये ॥ ॥ रागमंगलवसंत ॥ ताल ॥ षडंकंकार ॥ ६ ॥ ७१ ॥

ह्रीं २ गगनसंसारउथारि पामनोहरनमोलु २ पंचजिनेश्वरा २॥ ॥ नमामि २ श्री
शांतिपुरेश्वर ऋद्धि सिद्धिवरदायनी ह्रीं दुरितरणी सर्व पापक्षयंकरं दान प्रत्येय
हुमोक्षप्रदाता॥ ॥ नमामि २ धर्म्म धातुवागिश्वर षोडशदु ओरपरि मण्डिता ह्रीं षोड
शनोररणाक्षुरणांक्षुरणांकारासर्वदेवपरि मण्डिता॥ ॥ नमामि २ वागीश्वर मराउल पम
गिरि निवासिता ह्रीं सलवि मोहिनदुःखविनाशिनथरणामामि जिनचक्रेश्वरा॥ ॥
राग॥ नाट॥ ताल॥ झपि॥ नमामि २ जिन पंचजिननमलु ह्रीं दशभुमिखविंशत
महासुखलायता॥ ॥ स्वर्गमर्त्यपाताल भुवरणश्री कोंपोलललकं ह्रीं स्वठानिरंजन

स्फुरितारे योगिनीवृन्दयारे ॐ वज्रधात्वीश्वरी रूपआलिंगनावा स्फुरसकरमारे
॥ पूर्वचक्रविन्दियारे दक्षिणारत्नविस्फुलियारे ॐ पश्चिमपद्मप्रकाशारे उत्त
रकुधारियारे॥ संपुटयोगभरडानिशियलकटरियारे ॐ कायवाक्चित्तम
डलरोफनिनाचगगणाकहेदियारे॥ रूपसरपशब्दगन्धर्वसयीमिरिया
धर्मधातुहोयि ॐ कर्णपारमराउलत्वर्यागावंतियवाहिरपूजनहोयि॥ ॥ ह
राग॥भैरवी॥ताल॥त्रिडुरा॥ नमामि श्रीजिनधातुकरंडकचत्यमूर्त्तिआलिंगि
नाॅ ॐ पंचज्ञान पंचधातुस्वरूपायुक्त धर्म आलयेश्वरा॥ श्रुतिताहूँ हूँ सोनाहूँ ॥७२॥

अहंसूत्रविश्वसिद्धिरहं ॥ ॐ ॥ राग ॥ त्रिवेद ताल ॥ साथ ॥ कमल
विकासित स्थिति भास्वरकुंदविधेवर्णा समदेहा हैं चतुरवदनकुवलय
दलपत्रनेत्र अकाधिता ॥ ॐ ॥ नमामि २ श्रीमद्मंत्रपि सकलगुरुमाला
यासुरगुरु हैं कुमतिदहनखलचरप्रद सर्वज्ञानविधिपारिता ॥ ॥ प्रथ
मकरस्वपद्म शशिधरमुखा आलिंगनाराजिता हैं द्वितीय अंकुशधरतुंगी
यशातस्कंधचतुर्थ खड्गसरक्षंधरा ॥ ॥ अभयभुयपाशाभुवत धर्मचाप
चतुर्थवामधृतपुस्तका हैं रत्नमंडितकेशी अक्षवलिता किल्विषलहरिवरा

महामुनिधरा॥ ॥धर्मश्रीमतिश्वरी ई नेपालमण्डलमहिसुराजरूपि
॥ ॥वामभुजपुस्तकधनुधरा ई दक्षिनभूलवज्रशरधरा॥ ॥श्रीलोकेश्वरम
ण्डलमहसुखलाभा ई राजाधिराजश्रीनरेन्द्रमल्लदेव॥ ॥श्रीवज्राचार्य्यवन्दुदन्त ई
आचार्य्य ई भनीयिवाक्यवज्रगीतचरिता॥ ॥ए॥ ॥एए॥ ॥नाट॥ ॥ताल॥ ॥जति॥ स
कलजगत संसारस्वरूपोहं ई सर्वस्वपथरहर्त्ताकर्त्ताहं॥ ॥दिवीचिथुवरणएकअच
लं ई जगतवज्रमयं सर्वमिदंरूपोहं॥ ॥अहंखस्त्रिअहंसिद्धिस्थावरंजगतमोहं
ई अहंस्त्री अहंनपुंसकोहं॥ ॥देवासुरांहंजक्षजनकोहं ई अहंजल ई॥

मायानदर्पछादिरे माया मोह ॥ ध्रु० ॥ ये संसार असार रे रागद्वेषमोह छा
दिरे निरआसा ॥ ॥ अनासि खेतयनहुएकुरुया रे उममरि किकडुएचेव
येउ ॥ सहजसंभावनयउदलागतथरिया रे एम्वपरमसवासरूपे ॥ ॥
अवधुचउय चक्कपायडसाख रे गावन्तिनिरुदुःखपायभयचक्कनो
रिकेवोले ॥ ध्रु० ॥ राग ॥ तैरवी ॥ नाद ॥ रूपक ॥ एवन्तमण्डलयंवि
जजंरफोडभवबन्हिमण्डलं रे चयसुरोगपरिभुअुपभपात्रभक्तादिप
रिपुरे ॥ ध्रु० ॥ इदंमवलिगृह्ण रे रे सर्वविघ्नविनाशय रे चतुर्मीरांचाश

॥ निर्वाणिभक्ति हो थिरे मित भाषिता सर्वज्ञान विज्ञ सागरा हँ र हँ सर
णागतिपर मादि वज्रजन्मने ॥ राग ॥ कर्णाटि ॥ ताल ॥ रूप ॥ भी मंजु
नाथवर महाचित विजया हँ चन्द्र हास वक्र धारि नागवास कुंद स्थरु कु
॥ नमामि २ श्री मंजुकुमारा हँ जगदीश्वर जगतगुरु भुवना चापिता ॥ पु
स्तक धर शुभपरमगुरुलाया हँ श्री धर्म धातु स्थाने नेपाल मण्डलालंक
ता ॥ जगतनाथ जगतश्रीरंजननाथ हे सर्वशास्त्र विशारद पण्डित निरंजना
॥ राग ॥ देशाख ॥ ताल ॥ साथ ॥ मायाजाल विनु शत्रु शरीरा हँ मोह ॥

तमामि श्री तैरात्मादेवी त्रिभुवना मातव रुलादेवी श्री मृगस्थलि रं सय
रसुरासुर वंदित चरणो अनेक ऋद्धि सिद्धि वर प्रदा ॥ ॥ नन्दतवतमि वचं
दृतनरुवे अनेक कुसुम पारिजातवदते रंतिये गंगा वा गमति तीर्थ अनेक
तीर्थ सुरक्षेत्र व दतो ॥ ॥ अष्ट भैरव अष्ट योगिनी देवी अनेक सुरक्षेत्र
पार रं अष्ट महाभय दलित निरवारणी अनेक विघ्न विवारणी किंच
वियापिन चारिणी देवी अक्षय तिरंजन ज्योति मय रं अभिमत सुख फल
दायनी जन्म जन्मतेजु पाय सरणा ॥ राग ॥ तोडि ॥ ताल ॥ माथ ॥

२ भाम २ क्लिंद २ मि द्रव द्रव विरुध चित्तकान भस्मिं कुरु हूँ ॥ पंचबीजजंत
बीजाधिष्ठित पंचामृत पंचदीपं ३ समिरय प्रेरित प्रज्वलितगाना मृतम
यत्वज्रं ॥ ॥ ॐ आः ह्रौं यमुनादशदिग्वर्तिवश्वरी ३ सकल पीयूषद्र
यमानितनवैवाक्षरखप्रविश्य ॥ ॥ ॐ कारादिक मध्यविलितन्यक्षरा
धिष्ठित ३ दातपत्राभुक्तिमुक्तिपदं ३ भनयिरत्नवज्रवलितत्व ॥ ॥
॥ राग ॥ विभास ॥ ताल ॥ साथ ॥ विदलपद्मकमलवर्णाक्तिसुमसंगे मथु
कालहे रुवरीना ३ श्रीविरुपाक्षवसुखदेवी मेदते पालयथाप्रिना ॥ क

नसह स्वबोधि सत्व बुर्ना हार षोडश वाविंशत रमशाना ईं डाकार्णव मण्डल
प्रदक्षणा गुरुपाद शिरे थुतउकार वज्रा ॥ ॐ ॥ राग ॥ तरावरि ॥ ताला ॥
साथ ॥ लंबकर्ण लंबोदर विशालोचना ईं कलिउ शोभाकर सिंथर भुपि
ना ॥ क्रतिनाहुँहुँ तेनाहुँहुँ तेनातेनेतेहुँहुँ ॥ पायर नौपुर हाथेपा सुथ
रा ईं भुजयुत असंख्य धरा ॥ जभनी स्तम्भनी मोहिनी आकर्षणी ईं
आदि अंत कन्याशाकर शा ॥ स्वर्ग मर्त्य पाताल त्रिभुवन गणपति ईं
पूजियोरे सर्वकार्य सिद्धि ॥ थनहेंदोल घो ॥ रिद्धिसिद्धि वरसे पूर्णजिये

अष्टचत्वारिंशत्पत्रदलमाहे हुं वीजकथ्यार्द्ध श्यामाद्रेहा रं नीलद्वि
तरक्तपीतवर्णाभासप्रदक्षास्थे एकपंचासतेजा॥ ॐ॥ नमामि आजिता
श्री महासत्वराजवज्रवारही भूत्यंताकरुणाघनि रं भीषमटअर्द्धखट्वांगसन्नि
भा विश्वचत्रार्द्धदंष्ट्रखनसप्रभुजा॥ ॥ अथमपूर्वेवज्रहिंगणामा खंगिमा
रेडाकिनीवज्रडाकादि रं द्वितीयआकाशवायुमेदिनीस्थाकिन्नरीयोगिनी स
वाकान्ता॥ ॥ नृतायवर्त्तरअग्निजलज्ञानदेवी निर्विकल्पकल्पकन्यादि युता रं
चतुरस्रचतुरविंशवाक्षरणांगि अष्टशीभयुक्तचंडशतनाथा॥ स्तुतः ॥७

सिद्धिदेहिमे ॥ ॐ ॥ ॥ राग ॥ कामोड ॥ ताल ॥ खट्टकंकार ॥ मृगेन्द्रधातो
परिसंस्थितांतें वज्रयी मुद्रांकित भुजमवर्णां ईं श्री वज्रांक शशि मण्डलस्थे
यंकार संजात प्रणामामि शांतें ॥ १ ॥ अश्वेन्द्र सूर्यापरि संस्थितांतें रत्नांकमु
द्रांकित पीतवर्णां ईं श्री रत्नांक रवि मण्डलस्थे यंकार संजात प्रणामामि
शांतें ॥ २ ॥ मयूरेन्द्रोपरि संस्थितांतें पद्मांक मुद्रांकित रक्तवर्णां ईं श्री पद्म
डाक रवि मण्डलस्थे यंकार संजात प्रणामामि शांतें ॥ ३ ॥ खगेन्द्र राजो परिसं
स्थितांतें कृपाणा मुद्रांकित शाद्वर्णां ईं विश्व डाक रवि मण्डलस्थे यंकार

विश्वेश्वरं त्रिभुवनव्यापिनं तेनानेतेना॥ ॥ गण॥ भैरवी॥ ताल॥ त्रि
हुरा नमामि २ श्री हारिति महायक्षणी देवीं पंचपुत्रपरिवारिणी देवी
ॐ नमामि २ पद्मनी मानवी देवी जगत संसारपति पालिता ईं जय
जय सृष्टिसिद्धि मोक्षमुक्तिप्रदा॥ तेनाहुं हुं तेनाहुं हुं॥ नमामि २ ई
श्री सूर्य धनदेवविजयशोभिता रं द्वादशवर्षपुत्रपौत्रीविचारिना॥ नमा
मि २ श्री चूडा नामभिक्षुणीदेवीं धर्म भ्रातृ परिवारितनिषेवयन्ति॥ न
मामि २ श्री मंजुवज्रेश गीतचरिता रं प्रणमामि श्री पद्मपाणि देवी सृष्टि

ज्ञानमार्गसदृशपात्रत्रैलोक्यैकनमोजत॥ ॥ नमामि २ श्रीवज्रसत्वजम्भजम्भ
तैजुशरणा २ सतगुरुचरणो भावप्रशादे देहितल अद्भुतावि॥ ॥ रागार्थं
गारमारुश्रि॥ नाल॥ माथ॥ प्रवरा त्रिखिजल भूमे सुमाऽे स्थिति विश्व
कलिशोपरिक्रियागारं २ चतुर्थं चतुर्वारतोरणा शोभित विश्ववज्रमध्ये हूं
कारबीजजं॥ ॐ॥ तेनाहूँ हूँ तेनाहूँ हूँ तेनातितेतूँ हूँ हूँ॥ ॥ नीलवर्णान्वितैत्रै
वैषवज्रालिंगित रत्नमकुटरत्नाभरणशोभिता ४ खड्गपाशधृ प्रज्वलित
मूर्तिर्डाकोदकपीडित भीषमूर्ति धरा॥ ॥ पूर्वादिदिग स्थश्चैनाचलवीर

संजातफणामणि शांते ४ बबेन्द्रविशेषपरिशोभितांते रुभोरिश्रुजांकित
नीलवर्णां ईं श्रीवज्रडाकशशिमण्डलस्थं मंकारसंजातफणामणि शांतं
रसा ॥ भैरवी ॥ तारा ॥ छिन्ना ॥ नमामि २ श्री मंजुवज्रासनस्थौ
सनविश्वविभास्वरां ईं पंचस्कांधात्मकवज्रकायस्वभावेशं मंजुवज्रा ॥ ७ ॥
तेजाहूंहूं तेजाहूंहूं हूं सकलविघ्नविघातकरुणामय मूर्तिस्तवप्रयानस्तुदिता ४
नमामि २ वागीश्वरभावाभावरहितवज्रसत्वां गांतत्रिगुणानवयभूजितव ४
स्रवज्रयराजकमात्र ॥ नमामि २ त्रिभुवनेश्वर सर्वमाकार्यकारणान् ईं ४ ॥ ७

प्रशाद ँ जन्मज मवज्र विरावितीसरणा ॥ ॥ राग ॥ मलाल ॥ ताल ॥ साथ
॥ अकुथ हाथे चबुरासि सिद्धा काया काय विहारा ँ काया अगि वायु मेदिनी ह
कायासर्वतिथो ॥ ॥ वोलगिरे लहतु सयोगिनी वंथव सयर विहारा ँ काया
छादि ँ आन मानिते मोरुह लक माला ॥ ॥ कायाचन्दु कायुर्य कायात अचमा
ँ पण्डित सयार विहार पति थो कुरुहि भिक्षु भलाडो ॥ ॥ कायागा यो कुन काया
महबोधि काया सर्वतिथो ँ अष्ट समुद्र विश्वेकारुणे काया मेरु मण्डल ॥ ३
अष्ट वेभपकिनि नोलन शोभित नव द्वारे ँ चीयं वज्रासनी देवी थाविरे

अग्नि पाशधर चतुरानन्द मूर्त्ति धरा ॐ विदिग्गस्थित मोह वज्रादि चतुर्दंष्ट्रा
कर्त्रिका पात्र धूम्र मोहज्वर तप्ता ॥ ॥ पद्मावलि ज्वालावलि ज्वालाकुल चक्र
शंकादि दशदिक्पति शोभिते ॐ वज्र सत्व जनोत्पत्ति श्री चण्डवीर जन्म जन्म
तुंजुपाय सरणो ॥ ॥ रागपंचम ॥ ताल ॥ साथ अष्टनारी अष्ट धारणका
ॐ ॐ अष्ट योगिनी वचते ॥ ॥ शिरसि सिंदूर कज्जल सुरा ॐ देवी उपादेत
मार्ग मोक्षे ॥ ॥ नरसत्व अस्थि धारणकां ॐ गुरुवाक्य वाक्यन आरोग्ये ॥ कुल
वंश मातृतत्व फलद ॐ कुलजि कविनाशफलद ॥ तत्वशिरशि सिद्धिफल ॥ ७

थन मातृका पूजा ॥ गीत ॥ अकारसंज्ञान ॥ ॥ खूलनृत्ये ॥ गीत ॥ नमामि २
श्रीहेरुक ॥ ॥ गीत ॥ हूंहूंदेह ॥ ॥ गीत ॥ कौलार्ह ॥ ॥ गीत ॥ नमःहूं ॥ २
गीत ॥ परमरतो ॥ ॥ गीत ॥ सुप्रतिमाराउत ॥ ॥ गीत ॥ शून्यनिरंजन ॥ ३
गीत ॥ विहंडा ॥ ॥ गीत ॥ भास्वरखराउ ॥ ॥ थन गुरुमण्डल ॥ गीत ॥ मध्ये
मेरु ॥ ॥ विसमाथि ॥ गीत ॥ अनिला ॥ ॥ गीत ॥ अनुत्तर ॥ ॥ गीत ॥ रुरुव ४
र्ग ॥ ॥ गीत ॥ प्रवनशिखि ॥ ॥ गीत ॥ छविनी ॥ ॥ गीत ॥ एमहि मराउल ॥ ॥ ५
गीत ॥ जिनजिका ॥ ॥ गीत ॥ जिनवरजननी ॥ ॥ राग ॥ भैरवी ॥ ताल ॥ रूप

ॐ नमो देवी वि द्या र्थि देवी वि दश्रायेनित्या ॐ
पिनी ॐ ह्रूं त्रिसंधि दायनी जगतवंद्य ननी ॥ ॥ ह्रूं दैं ह्रूं दि निवास्य पात्र भारि ॐ
विचित्र पुष्प माला कर जो धारि ॥ ॥ मातृ मण्डल मध्ये यो नर रथि ॐ नाना रत्नाल्का रत्र
रेखवेधि ॥ ॥ भनयि रत्नवज्र गिता ॐ श्री वज्र देवी चलन मोक्ष गमना ॥ ॥ थन
लि अहो रात्र यज्ञ याच्चा कराठ आरम्भ जुत ॥ ॥ प्रथमं यज्ञ मण्डल संप्रवेश ॥
जुये ॥ ॥ गीत विश्व सरि रूढ ॥ गीत ॥ हरिवर ॥ गीत ॥ विश्व वरा ज्वलित ॥ ॥ ॥८०॥

ह्रविध्वंसनं अचलवीरा ह्रँ अति मथेवरसादिवज्रगातअनलि सरलवज्रयु
रुखुमरणां॥ ह्रीं॥थन॥ गीत॥ चक्रिकुराउल॥ ॥ गीत॥ ज्वलितवज्रानल॥ ॥
राग॥ हेदोल॥ ताल॥ खट्कुटकारभं हुंबीजसंजात श्यामवर्णाभा हुँ वज्रवरनाम
महाक्रोधलाया॥ ॐ॥ नमामि श्रीवीरेश्वरा हुंज मधुत्रिनाशिला॥॥ रक्तव
र्णाभा हुंबीजसंजात रुंज्वालामारी नाम महाक्रोधेश्वरा॥॥ अतिवरवेग म
क्रोधलाया हुँ संबीजसंभूत महाकृष्णवर्णा॥॥ चकारसंजात महावरणामा हुँ
अतिजिसुतवर्णा महाक्रोधाधिपा॥॥ अपराजितनाम महाक्रोधराजा हुँ कंबी

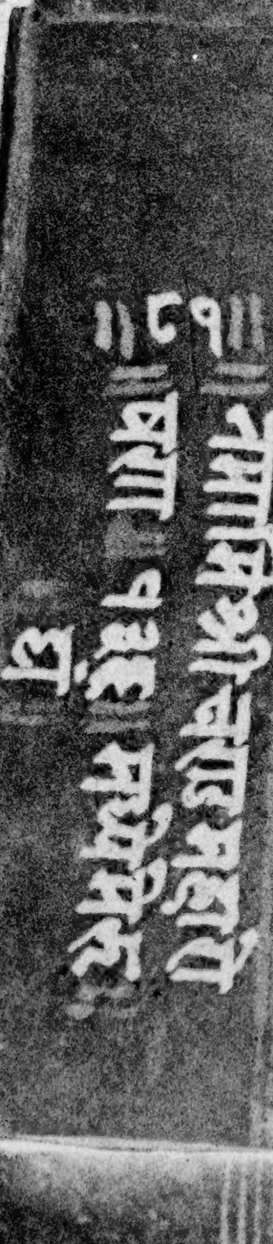

नमामि श्रीचराउ सहारो धरा देव सुनरेंद्र पाप भयहरणां ईं जगतपरि
चारणं भवदुःखहरणां मारिपुदैत्य शत्रुहरणां ॐ हूं हूं भरणीमराउल
उपरिरविशशिमराउला जादुपादेत स्त्री अचल वीरा रं गर्ज्जानजीमुतनील
वर्णाभानिविजयराणा क्रोधत्रिलोकवी॥ दहितलऊर्द्धउजोतिविलोलनं त्रिशु
लाकपतअसुरं रं रनर्ज्जशक्तिपाशधरं हस्तादृष्टिप्रबलकरणां॥ ॥२
अतिघोषणादितरौद्रभयंकरं त्रियलोचनत्रिलोकरणां रं दुष्टनरोगप्रहारया
दुसहं दशदिगमारसंत्रासनकरणां॥ पंचतथागतस्फरणासहरणं त्रि ॥८१॥

॥८१॥

कायवाक्चित्तवज्रीलयोगि। श्रीवज्रसत्वआराधियोः अनुत्तरसिद्धिप्रदमोक्षफ
लदो। पूर्व। यामाष्टकालक्तक नीलसंहरने वैश्रवणेक भैरव पेतनीलय हूँ अप
राजितालिंगित दण्डभरणां वामनादिदुष्टगणाघातकरणां॥ श्रीवज्र। पश्चिमे॥
पभांतक रक्तसंहरने ज्वालाकुलाक्षि नूवर्णनूक्ष्यालिंगित हे पभांतक दण्डय
मारीत विक्रमनागादिदुष्टगणाघातकरणां॥ श्रीवज्र॥ उत्तरे॥ आतक नील स
हरने एकजटासंपुटकृतक्रमघाति हूँ विघ्नवर्णालिंगित दण्डभरणाकवेराद्दिदुष्ट
गणाघातकरणां॥ श्रीवज्र॥ ईशानतत्वीराजकारसंहरने वज्रदिवीसंपुटवज्र

जसंभुत अर्ज्जनवर्णा ॥ जकार संज्ञात अतितीव्रवर्ण है संवर्त्तकनाम म ह्र
कोधलाया ॥ यमान्तकनाम म ह्र कोधलाया है स्त्रीबीज संज्ञात अतितीव्रवर्ण
॥ ॥ संबीजसंभव कोकणविर्ण है किलिकिलनाम म ह्र कोधेश्वरा ॥ महाकिलि
किलिजः बीज संज्ञाते है परासर्वज्ञ अतिकोधराजा ॥ ॥ गीत ॥ ॐ नमः श्रीमः ॥
॥ ॥ राग ॥ भैरवी ॥ ताल ॥ रूप ॥ ह्रदयमान्तक वीर संहतक वज्रविनाली संपु
टचक्रोद्यमशानि है वज्रकुलज यक्षी वीरेश्वर ह्रदादि हुंस्वराधारकरणी ॥
ॐ यथायोग्यथ सर्वहुंरे कीलहुं फडुमायहरे ॐ वज्र कीलय वज्रय आवा ॥८२॥

प्रतिसरासंपुटवज्रहस्तं खेचररविविबुधसगणब्रह्मारिष्टगणाधा
ष्टकरणं ॥ श्रीवज्र ॥ अथसुभराजनीलाश्मसन्नते स्त्रलिनी संपुटवज्रहस्तं
हूँ शनैश्चरविमलिनपृथिवीरूपगणं शेखारिष्टगणाधाष्टकरणं ॥ श्रीवज्र ॥ ॥
विश्वत्रासार्कपितज्वलितहूँकारं वज्रहूँकारनीलवर्णदेहं हूँ प्रणामामिदशको
धराजं सर्वसंपत्तिप्रसादपदं ॥ श्रीवज्र ॥ ॥ थतगीत ॥ प्रमोदित ॥ ॥ गी
त ॥ गंधमण्डले ॥ ॥ गीत ॥ निर्मलगात्रुज ॥ ॥ गीत ॥ प्रवरामण्डल ॥ ॥ गीत ॥
नमः हूँ ॥ ॥ राग ॥ मलाल ॥ ताल ॥ साथा ॥ विश्वकमल मध्ये हूँकारसम्भव हे

ह्स्त्रैं अरछ्ह्रास्मह्रापित्वनद्दुतादिद्दष्टगणाधारकरणां॥ श्रीवज्र॥ह
नैऋत्येनीलरण्डनीलसहतते वज्रभुतस्ता संधुरवज्रदण्डिनश्रै लक्ष्मीवत
हुतासन महापित्वते दिशीजातिद्दष्टगणाधारकरणां॥ श्रीवज्र॥ मारुति
महावरधरसहतेवज्रगंधास्तिसंधुरनिभूलह्स्त्रैं घोरांधकारमहाबलमहा
ने वातादिद्दष्टगणाधारकरणां॥ श्रीवज्र॥ ह्रंगतेअचलनीबाधुसनेनि प
र्णशवरीसंधूरवज्रह्स्त्रैं श्रीमत्किलिकिलालवमहापित्वराक्षसाता
दिद्दष्टगणाधारकरणां॥ श्रीवज्र॥ ऊर्ध्वठक्किपवक्त्रेश्वेतसहतेमहा॥८३॥

ना॥ ॥ गीत ॥ धूमांगारि॥ ॥ गीत ॥ स्वदसंहार॥ गीत ॥ डाडाभरणा॥ ॥ गीत ॥
अवनिनी॥ ॥ गीत ॥ थरथर॥ ॥ गीत ॥ वज्रयोगिनी॥ ॥ वाहिसाहिये॥ गीत
चिहंडा॥ ॥ थतउपमालको हुलो॥ ॥ शतिथुलि अहोरात्र यज्ञ याचवाकरात्र
समाप्तञ्च॥ शुभम्॥ ॐ॥ ॥ थतचक्रसूनायाचवाकरात्र आरम्भञ्च॥ ॐ
नमःश्रीचक्रसंवराय॥॥ नन्दितमस्कार॥ ॥ थतरागमाला॥ ॥ गीत ॥ विश्व
सरोरुह ॥ गीत ॥ अनिल ॥ गीत ॥ ब्रह्मनि भोजन॥ ॥ गीत ॥ नमस्तु॥ ॥
गीत ॥ वैद्यमय भूमि॥ ॥ थतक्रियासमाप्त ॥ गीत ॥ ॐ खवज्र थूक॥ ॥ गीत

खड्गपाशधरत्नमङ्कुशाभरणां ॥ ॐ ॥ नमामि श्रीचण्डमहारोषणावीरां हूँ क्षेत्र
वस्त्रालिंगणाभवभयहरणां ॥ पूर्वदिगास्थितकुरुकुल्लवर्णां हूँ मोहवस्त्रालिंगि
तश्वेताचलनाथां ॥ दक्षिणापितोचल-पिशुनवश्यीसाहिता हूँ पद्मकाञ्चनाभपि
शुनाशकां ॥ पश्चिमश्रीरक्ताचललोहितवर्णां हूँ भवरागनासिरागवर्जयी
॥ उत्तरेङ्गवर्णाश्री श्यामाचल हूँ ईर्ष्यावस्त्रालिंगणा-जगदिंपानाशनां ॥ ६
प्रणमामि त्रैलोक्यवीरेचित्रुवणमल्लदरणां हूँ गुरुपादशिरे भूत भनायिरत्नकु
लिशं ॥ गीत ॥ पूर्वकाराधित ॥ गीत ॥ विडंबा ॥ गीत ॥ चरणेग्रक्षमथा ॥ ८४ ॥

॥ अभ्यन्तरसप्रवेश ॥ गीत ॥ कोयिलेवंसा ॥ ॥ थेतेदिक्षाविधानयाचरि
ता ॥ ॥ थतत्वकपूजा ॥ गीत ॥ हाडाभरण ॥ गीत ॥ धरधर ॥ ॥ नंदिनमस्कार ॥ ह
गीत ॥ विश्वसरोरुह ॥ ॥ गीत ॥ हरविर ॥ ॥ गीत ॥ एमहिमण्डल ॥ ॥ गीत
ओंकारसंजात ॥ ॥ गीत ॥ इडुयेमान्तक ॥ गीत ॥ प्रमुदित ॥ ॥ गीत ॥ ह
थेथेमेरु ॥ गीत ॥ अनिल ॥ ॥ गीत ॥ रक्तवर्ण ॥ ॥ गीत ॥ नमःस्तु ॥ ॥ गीत
॥ अष्टचत्वारि ॥ ॥ गीत ॥ त्रिभुवनाज्वलित ॥ ॥ गीत भास्करविस्तु ॥ ॥ गी
त ॥ शून्येतिरंजन ॥ ॥ गीत ॥ चिहंडा ॥ ॥ गीत ॥ चक्किकराउल ॥ ॥ गीत ॥ वा

प्रमोदित॥ ॥गीत॥ गंधमरुउल॥ ॥गीत॥ निर्मानामुज॥ ॥थनदेवच
र्या॥ गीत॥ हाडभरण॥ ॥थननंदितमस्कार॥ ॥गीत प्रविनतु गीत
॥वाग्वादहिनी॥ ॥गीत॥ चक्किकुरुउल॥ ॥थनदेवचर्या॥ गीत॥ सोदर्यहा
य॥ ॥गीत॥ सुप्रतिमंदित॥ ॥गीत॥ अवनिनि॥ ॥गीत॥ निजंभु॥ ॥गीत
त्रिलिलोकयन॥ ॥गीत॥ कोलाई॥ ॥थनसिद्धायणुकाठ॥ ॥थन नंदितम
स्कार॥ ॥गीत॥ हुरसिर॥ ॥गीत॥ एमहिमउल॥ ॥गीत॥ मथेमेरु॥ ॥गीत
॥अतिल॥ ॥गीत॥ रक्तवर्ण॥ ॥थूप॥ गीत॥ नमःहुं॥ देवपूजा॥ गीत॥ त्रिवक

गितनाचयी तवर संभावा॥ ॥ नील लोहित हिमकर समवदनाऊ
भिष शृंगार भावा २ वज्र यराठ गजचर्म डमरुवा मकरोटक खड्गा
॥॥ विश्ववज्र जथ्युतश्च भा वालचन्द्र पंचकपाल धरा २ व्याघ्रचर्म
कटि देशवासा नर मुण्ड मालाविभुषिता॥ ॥ भैरवकाली आलिढवा
पर्यायुत मर्द्ध सिद्धि स्वरुपा २ त्र्यंबक प्रतिमुख मुद्राविभुषित सुवि
शुद्ध जिनवर मौलि धरा॥ ॥ राग धनाश्री ॥ ताल ॥ जती ॥ विदलंस
जल गवीवरि इन्द्रसाऊ पर्यंक पादकान्ता २ क्षुभवरादि हुद्विभुजमे

मालहिनी ॥ गीत ॥ कोशलेवंसा ॥ गीत ॥ हाडाभरण ॥ गीत ॥ थर
स्थर ॥ गीत ॥ काश्मि ॥ गीत ॥ सकलज ॥ गीत ॥ नमामिश्रीचण्डवर
दैवरणा ॥ ॥ गीत ॥ परमरनो ॥ गीत ॥ हूंहूंहूंदेह ॥ ॥ गीत ॥ सर्वज्ञ ॥ ॥ गीत
॥ चरिताय सभान ॥ गीत ॥ भूमांगारि ॥ गीत ॥ दिवसिश्वर ॥ ॥ इति श्रीच
क्रभूजाया चचा कंठ समा प्रजुल ॥ ॥ शुभम् ॥ ॥ ॥ राग ॥ वलादि ॥ ताल ॥ ६
पवन दहनजल भूमि मेरुपरि विश्वकलिशमा यं विश्वकमला ई दितमनि
मण्डल हुंजभी हिरुक विभु खमरु भुज विश्वरण ॥ ॥ वज्रवाराही गोकालि ॥ ८६ ॥

डि॥नाल॥ माथ॥ द्वाविंशद्दलपद्मोपरि छं हूँ कारं स्वयंजतं अष्टदलमवि
रलमष्टदलिणा रं पद्मोपरि ठ डाकिनीलामाख्य ठ रौद्ररूपिणीक्रमो परि
पात्र॥ क्ष॥ प्रणामामिविरांचिरणी हेस्फुलिंगायं वरवाणीभ्यनाद्धस्थालि
गणा॥ ॥ पविचर्मडमरुकरि पर्शु चि शूलेव यष्ठगज खेडांगे पात्र
शशिरणावासे रं व्याघ्रचर्मनिवासत रौद्र हास्य भयानकमौलिक राउलकि
पुरविडुषिता॥ ॐ आं हूँ चक्रात्यवद्विंशतिपीठेभ्यो चतुर्द्वारवेद
तारणपत्रि सुशोभा रं अष्टकोणोपरि वज्रज्वाला संवृतावसुकोकपालअ

॥८७॥

कार्सं रुकवक्त्रं विलोचना ॥ ॐ तमामि २ जितजननी देवी विश्ववनेश्व
रपूजिता २ ऊर्द्ध ज्वलितपिंगलकेशा पंचकपालशिरःधारिता ॥ ह
वामकरेखिटवांग दक्षिनकर्त्ति धारिया २ अष्टमहाभयेवड्व्याधिद
शदिगमारविघ्नछिदनी ॥ चक्रिकरांडलकरिठिलोचक थारि त्रियेजि
नकरिवछिता २ हाडमरणाडुरांड मालालंकृत चरणौ नौपुर शोभिता
॥ पाविपाम्याघ्रत्य मदोगछिता द्वाविंशति योगिपरिवृता २ श्रीराज
राजेश्वरी शरिरांत धरिया अद्भुत २ सिद्धि मोक्षेप्रदाता ॥ राग ॥ लो ६ ॥८७॥

ऋषिसिद्धिवरविघ्नविनाशनं ईं गावंति हूँकारवज्रगीताक्षिणी ॥ रागा ॥ ल
लिता माला ॥ रूप ॥ पंचतथागत मयातुरि समयाचारिणि वयी वा
ग ईं दशदिगदिग्बलि आगच्छियारे समयानंद भक्ति होयी ॥ ऋ ॥
वीरवीरेश्वरवयिथाचारे मराउल मोहन विश्वकल्लिया ईं स्कारव
ली रत्नदेवी दान पतिय वी ग्नीरवाहणा ॥ पूर्वविरोचन दक्षिणारत्न
संभव अमिताभव पश्चिमवीयायीना ईं उत्तर अमोघसिद्धि अक्षोभ्य
समयानंद भक्ति होयी ॥ ॥ समाधि श्रीचक्र संवर मारुश्रीकालचक्र हे

ऽवैष्णवसंयुता ॥ ॥ वक्त्रगणाग्रथमण्डलपवित्रकायवाक्चित्तस्वकृत्यका
शं रँ रक्तकाचित्तविवियौ पयौषितांगुरुपादशीरंधार्य्या ॥ ॥ चतुर्वर्गफलां ३
प्रणामामि वीरवीरेश्वरी रँ गणाग्रजस्वाग्रजमजमुंजु शरणागतो ॥ रंग ३
॥ ललित ॥ ताल ॥ रुपजयविघ्नांतकहुँकारसेजाता रँ गजमुखगणपति
आलिऊपदस्था ॥ ध्या ॥ नमामि एकमुखंकीथलाया रँ त्र्यम्बक नीलवर्ण
पिंगलकेशा ॥ ॥ षड्भजदक्षिनकर्त्ति अखंडमरु रँ वामकपालखड्ग
धरा ॥ ॥ मुण्डमालाव्याघ्रचर्मलम्बोदरा रँ दक्षादिगमारविध्वंसनवीरा ३ ॥८८॥

वामकमुलथरवरदं अभरणासहजानन्दमूर्त्ति ॥ सुरनरयक्षगणापू
जियारे ईं लक्षानचरणशिरेगत धरिया ॥ तिमिलभोरखलखलुमोक्ष
ईं प्रलयार्कनिपापदःखहरणा ॥ रक्तवर्णमुखनयनसुलोचना ईं सर्वल
क्षणाश्चमसंपूर्णा ॥ रत्नखचित कृतधारियारे ईं लोकिश्वर मण्डल भुवन
विजया ॥ ॥ राग ॥ मल्लार ॥ ताल ॥ साथ ॥ भाद्र मण्डलमाझेज्वलित
हूंकारा ईं आलिकालीदुर्ईचापयीहरुका ॥ ॐ ॥ नमामि नीलालंब चित्रव
रोलाथा ईं वज्रवाराही आलिंगणा अभय ॥ ॥ लक्षवर्णचित्रवदनविनिया

वज्रकायविद्यापिता ॐ योगयोगिनीमेरी विन्ध्यवासदेवी समयानन्द
भर्ति नहोई ॥ सिंहनादवासियोऽउमरुहीदे अष्टयोगीनीनरीदानप्र
णवं ॐ जारंथरिपूजाऽउर थूवलयीया कर्णपाचरणाभननी होयी
॥ राग वरणि ताल साथ ऽउरितुलत कमलासनकीरणी ललित
प्रचनशोभा ॐ निर्मलहृदय करुणामयनाथा देहिअभयवरप्रदाना
॥ ऽउ तुलसिवयुगेयुगेतात्रिभुवनव्यापितत ॐ जगतऽउकारि प्रणामामि
वुगमलजोकेश्वरा कनकरत्नमणिहार ॐ भूषितकनकसुत्र धारिता ॥ ८५ ॥

॥ श्रीवज्रयोगिनीनाचर्या ॥ ॐ ॥ रागमधुमत ॥ ताल ॥ दुर्जमान ॥ अगनित
कलुखविदारणदेवी विघ्नान्तकमहाकोठलाया २ सुरनरनागयक्षगणाव
दित देवगणेश्वरभुवणाव्यापिता ॥ ॐ ॥ नमामि २ श्री गणपतिचरणो कू
सिसिद्धिवरदायकं २ दुरितहरणशुभमंगलदायक सर्वलक्षणपूजिता
॥ ॥ गजमुखत्रिनयन लम्बकर्णालम्बोदरनृत्यादिया २ नांदवरअतिवर्ण
देहा रक्तवर्णा महोज्वाला ॥ ॥ रत्नाभरणविभूषितदेहाघाघरनादमनारथा
२ कच्छपागिरिनिवासित गणपति विविधियात्रनिधि पूरिनाजन्मज

विश्वकलिशअर्कचन्द्रयुते ॥ डाकिनीलामाखण्डेरेहा ॐ रुपिनीचण्डदेवी ॐ
कुण्डलिविलासा ॥ ॥ भुविषण्मुद्रा ॐ त्रिसंवीरेश्वर ॐ भवयि अनुपमव
ग्रहैकदासा ॥ ॐ ॥ राग ॥ विभास ॥ ताल ॥ रूप ॥ करिएकरुतकदेवीरु
एमाला ॐ सहजानंदवा छलादेवीकालीया ॥ ॐ ॥ त्रिभुवनतुलसतुल
एकाली ॐ सयरविमलसे तुलएकालीया तुलवा छलादेवीनानारूपे
ॐ एकपादतोरायतलीना ॥ तुलवामवाछलीदेवीजगतउद्धारणी ॐ
नोएसहारभीहेरुकलाया ॥ ॥ पादुभेरवउभयसंसचरणा ॐ एसचराच

हामञ्जुश्रि महाचिनक्रिया ॐ नेपाल मण्डल मारेः प्रभागिरिनिवासिता॥
नमामि २ श्रीमंजुघोष ॐ कुंकुमवर्णादेएकामेचतुर्भुजा॥ दक्षिनभुज व
ज्रसरथारि ॐ वामभुजप्रलकथत्र धारि॥ अक्षणमण्डलश्री मंजुकुमार
ॐ शुक्लवर्णापाद्मकाच्छित पूजिता॥ दक्षिनश्री गणापति श्वेतवर्णारि वाम
श्री महाकालनीलवर्णा॥ सप्तरुपधादेमक्षिसिद्धिदाता ॐ भनयीश्री
सुरतवज्रगीता॥ ६॥ रागा नटवरि ताल साथ॥ दिनमति मण्डल वे
जाप ॐ रौद्रविलोचन दिगंवरा॥ ७॥ नमामि २ श्रीविद्याथरि देवी ॐ अने २

मोरु गणपति सरणो अभिस्म श्रसुखफल दायकं ॐ शतगुरुश्वरणोशिरेगत
धरिया गावंति सहजानंदगीता ॥ राग मारव ताल माथ पंचडाक
डाकिनी वीरवीरेश्वरी ॐ पंचाचल श्रीचण्डमहारोषण श्रु प्रणामामि श्री
चक्रसम्वर श्रीहेरुवलाया डाकिनी नामा खण्डरोहा रुपिनी ॐ हेवज्रवि
राचल स्वान डाकिनी संगे श्रीउग्रतारिणी सेवक भनयीवज्रगीता ॐ जन्म
मोरुतंजुचरण सरणागतं योगांवरण स्वान डाकिनीनै रात्मा ॐ वुक्कडा
किनीवि चाधरि भवभयहरणं ॥ राग नाट ताल जती श्रीमद् ॥ ९१ ॥

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ श्री परमगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ श्री परात्परगुरुभ्यो नमः ॥

जितगुरुचरणा ॥ ॐ ॥ ॥ राग ॥ मलाल ॥ ताल ॥ रूप ॥ वृणति परम महासु
खहेरुक ३ विविधिवाद्यमुल्लादयन्ति ॥ ॐ ॥ तेना हुँ हुँ तेना हुँ हुँ तेनाते
तेहुँ हुँ ॐ आः हुँ हुँ २ ॥ ॥ कमलकुलिश अनुजवि भावित ३ मंत्रजाप जोगि
सुरुजादन्ते ॥ ॐ ॥ ॥ राग ॥ मलाल ॥ ताल ॥ रूप ॥ विदलपद्मोपरि सर्व हृ
दय शशिमण्डला २ अंकारबीज संजात कृष्णवर्णा महाद्युति ॥ ॐ ॥ नमामि ३
श्री नैरात्मादेवीचिश्रुवरणसुरनरपूजिता ३ अष्टमहाभयडम्बिहरणो ॥
सिद्धिसिद्धि वरप्रसादा ॥ ॥ एकवदनत्रिनयनी शिरे पंचकपाल धरा ३ वा

कनकवृद्धिसिद्धिवरप्रसादा ॥ दहितविन्दुरवामुशक्तिपात्रं विचित्रपुष्प
माला हस्तांजलि ॥ मकुटके शारि दिव्याकान्ता ३तुलदेवीश्रीजगजननी
॥ श्रीवज्रडाकिनी योगिनीमण्डितशरीरधृता ३ गावन्तिसुरतवज्रमंगल
गीता ॥ ३ ॥ राग कर्णादि ताल रूप गिरिवर महासिद्धि एहा ३ पू
र्वगलोपितस्थापनाते ॥ ॐ नमामिश्रीवज्रासन अक्षोभ्यपंचवक्त्रं ३ व
ज्रसत्वत्रणामामिजितेश्वर ॥ दिव्यचक्षुसत्वठस्थानाकनियं ३ देशयमा
ना धर्म्मजलमृत्युविनाशनं ॥ सुरासुरनवज्रचरणा ३ भनयिकवज्रवेता वज्र ॥ ९२ ॥

वज्राशिचिशूलकर्त्रिवाणांकुश ॐ डमरुकर्त्रिचक्रकपालहृदकुठारा॥ ॥६
वामेथराजाभरणाखट्वांकपाला ॐ धनुपासरत्नपद्मशंखवैलत्यना॥॥ भृंख
लखलशिरं धरियारेलोया ॐ जिनवि घ्नोघि सत्व सहिता॥ ॥ क्रोधराजद्
तिमातृगणासुरासुरै ॐ इन्द्रयमादिगणपतिगुह्या॥ ॥ नागनक्षेचक्रमा
रिगणावृता ॐ प्रणामामि चक्रेश्वरी श्रीकालचक्रा॥ ॥ राग॥ भैरवी॥ ना
ल रूप॥ अष्टभृंगावलकनकमणिमय नानारत्नप्रज्वलिता ॐ चतुर्दीप
सेगिरि मध्येमेरुमाहे श्रीवज्रसत्वगुरुविजयिया॥ अनुमेरुकोच न

मेरवक्षोगकमलपाचदहिने कर्ति धारि ॥ पेचमुखाविभुषितअयेगी ॥
वेनरमुराउमाला ई रौलजिह्वा महाभीमा नवसनाटसमरिडता श
नयुरुचरणोशिरधारि गावंतिमुरलवद्य ई भीक्षदेवीचरणोजन्मजन्मे
मोरुसरणा ॥ ई ॥ ॥ राग ॥ विभास ॥ ताल ॥ साथ ॥ हरितकमलोप
रिरविशशिमराउला ई राहुकालाग्नि मारेवदनहरायिया ॥ ॥ नीलली
हितविनाशित चउवदने ई जरामकुटवदनिवद्य भूषणा ॥ ॥ ज्वलकप
निमुखविश्वपायाकुदिना ई जिनपतिमौलि जिनकरणोभिता ॥ ॥ दहित ॥ ९३ ॥

मिनीदेवी ॐ त्रिभुवनाव्यापिनीदेवी ॥ ॥ दक्षिनभुजशरदर्पणाधारि ॐ वामभु
जसर्वरत्नभोजनधरा ॥ ॥ सिंहलद्वीपनारिणीलालितासनस्थिता ॐ सुरन
रकिन्नरभयनाशनीदेवी ॥ ॥ योगिनीमण्डलमाझे प्रज्वलितासिता ॐ सकलमण्ड
लमाझे प्रमुदितहृदया ॥ ॥ सप्तगुरुत्वरोगमोरु प्रणादे ॐ त्वंदेवीत्वरोगवेदितपा
रंगते ॥ ॥ राग ॥ गौरीभैरवी ॥ एकवरांएकमुखिद्वि भुजरत्नवरांचितवं ॐ द
क्षिनभुजगजाहस्तंमहावीरवीरं ॥ भ्रू ॥ नमामि २ श्रीभिमसेनपरमेश्वा ॐ
वामभुजअभयेप्रज्ञा धरप्रत्यालि ॥ ॥ जगतसंसारभफलप्रणादासिद्धिलं ॐ

मणिकिरणसयला भास्वरस्फुटविराजिता ह्रँ श्रीगुरुभास्कारसङ्खनाथा र
त्नमण्डलानि र्व्याप्तयामि ॥ प्रथमतर श्रीगुरुमण्डल अक्षिताचलाकम
लशिरे थरिया ह्रँ यंकाराजाता पूर्वविदेहा रंकाराजाता यम्बुद्वीपं ॥ लंअपर
गोडावरि वंउत्तरगवे विविधिरत्नासपूर्णा ह्रँ याउपद्वीपं याउपद्वीपंयाउप
द्वीपंयाउपद्वीपं ॥ गजरत्नपुरुषरत्नाअश्वरत्नास्त्रीरत्ना ह्रँ चक्ररत्ना म
णिरत्नचक्ररत्नवा सर्वनिधानसपूर्णा ॥ ॥ रंग ॥ नाद ॥ ताल ॥ जयी ॥ कल
कवर्णाएकमुनिनेत्रं ह्रँ विविधरत्नालंकृतदेहा ॥ ॐ नमामि श्रीभास्का ॥ ६४ ॥

चतुरभुवणा विश्व मारविश्व खाणिये यारे रं डाकिनी दिपीनी चंवासिकं वोजनी शो
खेताल संचासव दनी॥ ॥ सिंहिनी व्याघ्रिणी जम्बु कउरकिनी खट्वांगक पाल
पर्शुअंकुश हस्तं रं वज्रडाकिनी घोरखेताल डाकिनी चण्डाल डाकिनी चतुरदे
वी॥ ॥ जिनजननी देवी डाकिनी तेजे पाय सरणं पंचमुद्रा भरणा विलुबिणी रं
खऋफेटकवज्र धराठकरखट्वांगे पात्र परमेश्वरी ज्ञान देवी॥ ॥ राग॥ खट्टकं
कार॥ ताल॥ राग॥ कामोडा॥ प्रत्यालिढ पद शवा कोनाख वलम्बोदर रक्तदेहा रं
खऋनीलोत्पल कर्त्तिकपाल विश्ववणालाया श्रीवज्रेश्वरी॥ ॥ नमामि श्री

जगत मनवांछा सिद्धि फलं देहि मे ॥ पंच पांडव सहितं द्रौपदी रणाय स
हितं ३ अर्थ लाभ पूर्णाय सुमंगलं ॥ सद्गुरु चरणाब्ज प्रसादात सिद्धि मे ३ भ
वाभव्य चरणाभिमराजं नमामि ॥ पद्मनाल्य गिरि स्थित वज्रोभवाचार्य ३ ४
अमृतब्रह्मदेव विरचितं भिमगीतं ॥ राग भैरवीनाद एकताल अष्ट
क्षेत्रपालादि गणविदिराशुवते ध्वंसिनि मारचक्र रक्षते ३ गगणाशेषर गगणाङ्क
नाशुराकारा गगणा दामोरुवज्र धरिऽवाजियोरे ॥ झ ह्रीं ह्रूं नमामि पंच डाकिनी
पंच युगाचिरोल्लान डाकिनीसरणा युगायुगेना ॥ पूर्व उत्तर पश्चिम दक्षिणा

णा ऐं सर्वलस्फोटय ज्वलितहुंकार अष्टनागाभरणाकुम्भवर्णा झ्रूं
असुरभयहरणं सुरभयहरणं दुष्टनिर्जनमारय मर्दनं पापहरणं ऐं वि
दिरिश्चखण्डनं विघ्नेदलनं इन्द्रादिगजाशंकरणं ॥ दहितकर्जिधर पचन्द्र
त्रिणिलोयणं सरणं दुयिरमनासुमुनिगणं ऐं वामलक्कंगवरखलकपाला
भवसमुद्रसागरमंचपासं ॥ घोरक्रूंद्रुधिरअट्टहासनं विश्वक्रूंद्रं
क्रूंकरालवदनं ऐं व्याघ्रचर्म्मनिवासनं नरमुण्डमाला अलिवलिं खादनसि
द्धिफलदं ॥ गावंति सुरनवज्जुरुनाचध्यानं हुरुभावधरियाशारनवंग

जयन्ती देवी अक्षत्र सिद्धि प्रदायनी ईं विश्वजननी विश्व व्यापिनी रेंव
रीं महाकोपयुक्ता ॥ ॥ उग्रवक्त्रा एकजटी स्थूलसूक्ष्मरूपिणी देवी ईं पंच
मुद्रा पंचवक्त्र दुरन्त देवी वेदितव्या ॥ ॥ दामोदरप्रावंदिरि पाशाखड्गकि
रणा मारसंचारा ईं ब्रह्मकपाला महाकोपकिरणा सर्वशत्रुनाशन भवभयहर
णं ॥ सप्तएकवरणा शिरिणामिता महामुद्रा मंत्रसिद्धि प्रदाता ईं भवयिपत्ने
गिरि अमृतप्रभायोगिनी चरणा सरणागामि यं ॥ ॥ राग ॥ ललित ॥ ताल
रूप ॥ कालपादिवेथि अक्षोभ्य शिरे मोनि नासिकि आलिंगणाचिणि भुव

श्वरीवृषवाहनेचन्द्रधवर्णत्रिभूलपाशधारि ॐ हूँ हूँ अघ शमशानेनिवारस
हिता अघ भैरवगणपतिसहिता रँ अघ कृष्णि अमरणमोक्षप्रदाताशुम
रंतपाप्रभयहरणं पश्चिमइन्द्रायणी हस्तिवाहनेकंकुमवर्णाक्षत्रहस्ताः
रँ दक्षिणेवाराही घनघोररूपा अंकुशसहिता महिषारुढेनं इशानेच
त्रिकादेवी शुभ्रवर्णाकरि दण्डवेतालिदमरुसहिताः अग्न्यादिशक्तमारी
मयूरवाहनेरक्तराक्षसवर्णाशक्तिधारि नैर्ऋत्येविश्वरूपिगरुडवाहन गदा
चक्र सहितामयूरधारि रँ वायुवेचामुण्डादेवी कंकारवर्णा सिंहवाहनेखड्गखा

ॐ ब्रह्मधर्मसातनसंघपरिरक्षक श्री महाकाल नवयाद्सरणां राग
लांछित ताल रूप अरपत मंजुकुमारा ॐ शशधरकिरणा संकासन दे
हा फट् देवीश्री संजुघोष श्रुवणा व्यापिता ॐ तूलरव ऊवरदक्षिन करथारि
वामप्रलक शरसुरंगरुलाया ॐ पद्मपकासनदेहा दक्षिनवामक
रे धनुसरथारि ॐ चूत्रसारदर्पवानप्रशादे जगतनपालनाथ प्रमोदि
तहृदया ॐ अभिमंत्रसुरवफलवरप्रशादा राग भैरवी ताल
रूप पूर्वछायनी हंसमारुढाकनकवर्णा अक्षसूत्रधारि ॐ उत्तरमोहे ६७

रुणादेवी रुराउमाल ख्रदे रँ सहजानन्दे वाछलि देवी नाचथी ॥ ध्रु एका
लीगणावि भुवणा भुमरे तुलु एकाली रँ सयरविभ्रमसे तुलु एकालीया
तुलवाछलि देवीनाना रुपे रँ तोर भक्ता श्रीहेरुवलाया ॥ तुलवाछ
लिदेवी जगतउद्धारणी रँ एक पदमोले गयनेलैया ॥ पादुभैरवभयेसं
चरणी रँ ए सचराचर भीवज्रयोगिनीनाचयि ॥ राग मचालि ताल ४
रूप पदुमैचीभुविक्ष अहोमाभुन सहाव रँ तो कुविरहिनिवि सर्वस
र्व सत्वाहितव ॥ मा करुणाविअक्षे दहि पदुमा होहिभून रँ मामोकुदे

कनकवर्णापिंगलकेशा षड्भुजदक्षिणकर्त्रिअक्षवटुकरैवाम
कपालपात्रखड्गधरा मुण्डमालायोग्रचर्मलसोदरा२दधा
दिगमारविध्वंशनवीरा भृकुटिसिंहिवरविघ्ननाशनं रेगावंति हूँ
कारवज्रगी ना ... राग ... ताल ... जाति कनकवर्णाएकमुखवि
लोचा ईं विलियरत्नालंकृतदेहा ॐ नमामि२ श्रीछास्कामिनीदे
वी ईं विश्ववशाव्यापिनीसुरमोहिनीदेवी दक्षिणभुजचारदर्यसाभयी
ईं वामभुजे सर्वरत्नभोजनधरा सिंहासनी पतारिणीलालितासन

ल साथ वीरांचलरक्तमालाकरधारि ह्रँ कृष्णांचल पीतांचलरक्तांगा ह्रँ
मांचल ह्रँ वराभयमिश्रीचरणमातंगेश्वरां ह्रँ वैष्णवश्रीआलिंगिता ह्रँ
मोहनश्रीपिशुनवश्री रागवश्री द्वेषवश्री ह्रँ पंचमुद्रा पंचवर्णशोभिता ह्रँ
भुजयीपिबयी भवदुःखभयहरणां ह्रँ ज्वालाकरालवदनेसिद्धिफल
याकं भनयीभ्यो योगिनीसेवक अनुत्तरमोक्षेदेहिमे ह्रँविघ्नमारुद्रष्ट
गणावाशकरणां राग निर्वेद ताल साथ अक्षयनिरंजन अद्व
यअनुपम गणराकमलजेसाधना ह्रँ भूत्मानीरासितरायश्रीविद्याहे

स्थिता ईं सुरतारिभयनाशिनीदेवी योगिनी मण्डल साहे अम्ब लिंग
स्थिता ईं सकल मण्डल साहे प्रमोदित हृदया सतगुरु चरणे मोक्ष रूप
सादि ईं त्वं देवी चरणे वंदित पादे राग विभास ताल माथ जत
नी देवी कर्ति कपाला ईं खड्ग नीलोत्पल रक्त वर्णा ॐ नमामि श्री एकज
डेश्वरी रूपी ईं सिंहिनी आश्रिणी भव भय हरणे विविध विचित्र
पी सुख मालिनी ईं मुक्ति सिद्धि सुख मोक्ष दायिनी भक्त यी पभोगि
योगिनी सेवक ईं मोक्ष शरणा सुत सुत संशरणे राग मारवि ता